भिलाली

मौखिक साहित्य

गजेन्द्र आर्य

भिलाली
मौखिक साहित्य

गजेन्द्र आर्य

प्रधान सम्पादक
श्रीराम तिवारी

सम्पादक
अशोक मिश्र

आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
भोपाल का प्रकाशन

प्रकाशक – निदेशक
आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मध्यप्रदेश जनजातीय संग्रहालय, श्यामला हिल्स
भोपाल–462002 फोन–0755–2661948, 2661640
E-mail : mplokkala@rediffmail.com,
mptribalmuseum@gmail.com
web. : www.mptribalmuseum.com

प्रकाशन – वर्ष 2014

मूल्य – रु. 50/– (रुपये पचास केवल)

स्वत्वाधिकार – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

शब्दांकन – आदिवासी लोक कला एवं बोली विकास अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

मुद्रण – मध्यप्रदेश माध्यम, भोपाल

- पुस्तिका से संबंधित समस्त विवादों का न्यायालयीन कार्यक्षेत्र भोपाल होगा।
- पुस्तक में छपी सामग्री के किसी भी माध्यम द्वारा उपयोग के पूर्व अकादमी से अनुमति लेना आवश्यक होगी।
- पुस्तिका में प्रकाशित समस्त सामग्री संकलनकर्ता, लेखक की अपनी है, आवश्यक नहीं है कि अकादमी इससे सहमत हो।

ISBN - 978-93-83118-98-4

मौखिकी की शब्द सम्पदा में से गीत, कथा, गाथा, लोकोक्ति, मुहावरे और पहेलियों के संकलन एवं अनुवाद का उद्यम अकादमी द्वारा निरन्तर रूप से किया जा रहा है। जातीय समुदायों के इन वाचिक सांस्कृतिक आधारों का संग्रह और प्रकाशन आधुनिक बाजार के विस्तार के दृष्टिगत और भी आवश्यक हो जाता है, जब हम सभी विकास की एक ऐसी प्रतियोगी आपा-धापी में अपने को शामिल कर लगभग भाग से रहे हैं। ऐसे में हमारी परम्पराएँ जो हर तरह की भागमभाग से हमें निर्लिप्त होने का पाठ पढ़ाती हैं। विकास की इस अन्धी दौड़ और ठगी-सी हैं। हमारी जरूरतों के संसार से अब उनका सम्बन्ध कमतर होता जा रहा है। इस अनियंत्रित विकास का भी एक अंत है। हम जिस दिन इस दौड़ से थक जायेंगे। हमें परम्परा के बहुवर्णी पक्षों से ही शांति की अनुभूति होगी। ऐसे प्रयास उस समय मूल्यवान होंगे।

अकादमी के अनुरोध पर श्री गजेन्द्र आर्य ने भिलाला जनजातीय समुदाय के गीत, मुहावरे और पहेलियों का संकलन और अनुवाद किया है। आशा है जनजातीय वाचिक साहित्य के अध्ययन में उत्सुक अध्येताओं/पाठकों के लिए यह उपयोगी होगा।

- सम्पादक

अपनी बात

ढोल–मांदल की हुमकती तालें,ढोलगिया–फेफरिया का संगीत,बंशी की मचलती धुनें और भिलाली गीतों पर नृत्य करते भिलाले मन मोह लेते हैं। ये गीत वेदों की ऋचाओं की तरह सुनाई देते हैं। इसी तरह कहावतें एवं पहेलियाँ भी अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं।

प्रेम गीतों का बहुत महत्त्व है। इन्हें नृत्य गीत भी कहते हैं। प्रेम नहीं होता तो संसार नहीं होता, घृणा की लपलपाती अग्नि में जलकर भस्मीभूत हो जाता। जब अन्तस्थल में प्रीति की कोपलें फूटती हैं, तब सपनों के पंछी फुदकने लगते हैं। प्रेम गीतों की अभिव्यक्ति भिलाला लड़के–लड़कियों को परिणय–सूत्र में कसकर बाँध देती है।

वैवाहिक गीतों का आनंद अनूठा है। ऐसे अवसरों पर नृत्य होता रहता है। आँखों ही आँखों में बातें हो जाती हैं। भावनाएँ, भावनाओं को टटोलती रहती हैं। मंद–मंद मुस्काने बिखरती चली जाती हैं। सरसर करता हुआ गीत सरकता ही चला जाता है। रुकता है वहाँ, जहाँ आलौकिक आनंद की चमक मुख पर स्पष्ट दिखाई देती है।

मगर आज के बदलते एवं दूषित वातावरण से भिलाली गीत, कहावतें और पहेलियाँ विलुप्त होती जा रही हैं। इनका एकत्रीकरण एवं अध्ययन जरूरी हो गया है, ताकि इसकी ज्ञानराशि से लोग लाभान्वित हो सकें। इस साहित्य को रक्षित करना अनिवार्य हो गया है, नहीं तो ये गर्त में खो जायेगा। इन शुभ बातों ने यह काम करने के लिए प्रेरित किया।

– गजेन्द्र आर्य

अनुक्रम

नृत्य गीत / 11

वैवाहिक गीत /31

कहावतें / 63

पहेलियाँ / 97

नृत्य गीत

डजाड़्या वन मा महुड़ी घणी टपके
जो चिरलो चोरी ज्यो, चुरी माथे पोड़से।
पला झाड़ ना थुड़ मा, डुकाई रहयो चिरलो
वारू–वारू महुड़ी भाळी रहयो ओ।
एनी डाले पली डाले, हिन्डी रहयो चिरलो
वारू–वारू महुड़ी खाई रहयो ओ।
रंगीलो फुलको ने आंगणे रोमे घोघेरा
जुवार्‌यो लुगेड़ो रुळी रह्यो ओ।।

शब्दार्थ : **उजाड़्या** = सुनसान, **चिरलो** = पंछी, **डुकाई** = छुपना, **वारु** = अच्छा, **हिन्ड़ी** = घूमना, **फुलको** = पोलका, **रोमे** = रमना।

इस सुनसान वन में महुआ के फल बहुत गिरते हैं। इन फलों को ये पंछी चुराता है, इसलिए चोरी मेरे माथे पड़ेगी। उस झाड़ के पास छुपकर ये पंछी अच्छे–अच्छे फल खा रहा है। इस डाली से उस डाली पर घूम फिर रहा है। स्वादिष्ट फल खा रहा है।

कड़वी लिमड़ी नू साहळु सेळो घणो
आयणी आई जा ने काई, साहळु सेळो घणो।
नीळी जामळ्या मा बगल्यो पाणी पीतो जाय

आसी काय भाळे ओ आयणी मारो भायो जाय।
रातो झगल्यो पेरतो मारो भायो जाय
आसी काय भाळे ओ आयणी तारो लाडो जाय।
तारी बावड़ी नू पाणी उड़ावतो जाय
आसी काय भाळे ओ आयणी तारो लाडो जाय।।

शब्दार्थ : **लिमड़ी** = नीम, **साहळु** = छाया, **घणो** = बहुत, **आयणी** = समधन, **जामळ्या** = जाम, **बगल्यो** = बगुला, **रातो** = लाल।

कड़वे नीम की छाया बहुत शीतल है। समधन तुम आ जाओ। हरे–भरे जाम के पेड़ के पास बगुला पानी पी रहा है। देखो! मेरा भाई भी वहाँ है। लाल रंग का कमीच पहनकर मेरा भाई जा रहा है। समधन! तुम इस तरह क्या देख रही हो, वह तुम्हारा होने वाला पति है।

रातराणी रातली पुरई
बान्ड़ी घाघरी नाचणे टेवाय रोहली ओ,
रातेलो पान ओ नानी
बान्डी घाघरी नाचणे टेवाय रोहली ओ।
भगुर्‌या मा आई ओ नानी
बान्डी घाघरी नाचणे टेवाय रोहली ओ।
हाट मा आई ओ नानी
बान्डी घाघरी नाचणे टेवाय रोहली ओ।
पान ते खादो ओ नानी
पान खाय ने वारलु गोळाई रोहली ओ।।

शब्दार्थ : **रातराणी** = रातरानी, **रातली** = लाल, **पुरई** = लड़की, **नाचणे** = नाचना, **टेवाय** = आदत, **रोहली** = रहना, **बान्डी** = नीचे से छोटी, **गोळाई** = गोल।

रातरानी की तरह वह लड़की है। वह छोटी घाघरी पहनकर नाच रही है। उसके हाथ में पान भी है। भगोरिया में आकर नाच रही है। पान खाकर बहुत अच्छा नृत्य कर रही है।

धीरी–धम नाचूं न काई जुवाण्या
पाँय में काकरा कुचे न काई जुवाण्या।
धम–धम नाचूं न काई जुवाण्या
आखो आँगणो खोदो न कोई जुवाण्या।
मांदळ वाजे घणी काई नी जुवाण्या
नाचणे कोरे घणी काई नी जुवाण्या।।

शब्दार्थ : **धीरी धम** = धीरे, **जुवाण्या** = जवान, **काकरा** = कंकर, **कुचे** = चुभना, **खोदो** = खोदना, **मांदल** = वाद्य।

मैं धीरे–धीरे नाचती हूँ। मेरे पैरों में कंकर चुभते हैं। नाचते–नाचते आँगन भी खोद देती हूँ। मांदल भी बज रहा है।

आओ ओ आयणी मोहल्लु रोमजे
आयणी नु देय ते सान्दो भिड़येल।।

शब्दार्थ : **मोहल्लु** = एक नृत्य, **रोमजे** = नृत्य करेंगे।

आयणी आओ, हम–तुम मिलकर मोहल्लु नृत्य करेंगे। आओ देरी मत करो।

ऊंचो गुलर कवळो लिलेरियो,
कवळो–मवळो बेड़ीले लिजेरियो।
ऊँची आयणी गडली लिलेरियो,
गडली मडली धोरी ले लिलेरियो।।

शब्दार्थ : **गुलर** = एक पेड, **बेड़ीले** = तोड़ना।

गूलर का पेड़ बहुत ऊँचा है। कोमल फलों को तोड़ लीजिए। आयणी की अवस्था अधिक है।

आंबी सांबी रमो ओ लिलोरी
गेन्द्यो फूल रोमो ओ लिलोरी।
आयणी दारी के रोड़ाई ओ लिलोरी
गेन्द्यो फूल रोमो ओ लिलोरी।
भजल्या खाई न आपरी ओ लिलोरी
गेन्द्यो फूल रोमो ओ लिलोरी।।
मोंद पिने छाकी ओ लिलोरी
गेन्द्यो फूल रोमो ओ लिलोरी।
धोम–धोम नांचो ओ लिलोरी
गेन्द्यो फूल रोमो ओ लिलोरी।।

शब्दार्थ : **आंबी सांबी** = एक नृत्य, **रमो** = नृत्य करेंगे, **गेन्द्यो** = गेंदा, **भजल्या** = भजिये, **मोंद** = मदिरा।

हम आबी सांबी नृत्य करेंगे। गेंदा फूल रमेंगे। आयणी को रुलायेंगे। मदिरा भी जी भर के पीयेंगे। धम–धम करके नाचेंगे और नृत्य करेंगे।

नदी धोड़े ओ लीलो खेत
बाजरी झोलका मारे रे लोल।
ओ भाया निहीं आओ तारा देश
बाजरी झोलका मारे रे लोल।
नदी धोड़े ओ लीलो खेत
बाजरी झोलका मारे रे लोल।
ओ भाया निहीं आओ तारा देश

भालड़ी ढेर की आवे रे लोल।
नदी धोड़े ओ लीलो खेत
बाजरी झोलका मारे रे लोल।
ओ भाया निहीं आओ तारा देश
सोयड़ी दातली मारे रे लोल।
नदी धोड़े ओ लीलो खेत
बाजरी झोलका मारे रे लोल,
ओ भाया निहीं आओ तारा देश
न्हायणी बेस आइड़ाये रे लोल।
नदी धोड़े ओ लीलो खेत
बाजरी झोलका मारे रे लोल,
ओ भाया निहीं आओ तारा देश
आयणी बेस हलकारे रे लोल।।

शब्दार्थ : **धोड़े** = पास में, **झोलका** = डोलना, **लीलो** = हरा, **भालड़ी** = सियार।

नदी के पास हरा–भरा खेत है। इस खेत में बाजरा लहरा रहा है। मैं तुम्हारे देश नहीं आऊँगी, क्योंकि बाजरा लहरा रहा है। इस बाजरे में सियार बहुत आते हैं। सिंहनी भी दहाड़ती है।

झिनो–झिनो डोगलो, रातो–रातो फूल ओ
नीळो–पेळो डोगलो, रातो–रातो फूल ओ।
मारी ओ सारी आयणी लांडाय घणी कोरे ओ
झिनो–झिनो डोगलो, रातो–रातो फूल ओ।
मारी ओ सारी आयणी डोहाय घणी कोरे ओ
झिनो–झिनो डोगलो, रातो–रातो फूल ओ।
मारी ओ सारी आयणी हाट कोरने जाए ओ

झिनो–झिनो डोगलो, रातो–रातो फूल ओ।।

शब्दार्थ : **झिनो** = बारीक, **लांडाय** = झूठा, **डोगलो** = कमीच, **रातो** = लाल।

मेरा कमीच बहुत पतला है। इस पर लाल फूल बने हैं। आयणी बहुत झूठ बोलती है। वो हाट करने भी जाती है।

ओ भाया सोनीड़ा पुर्‌या, मेखे विजळ्या घड़ाई दे
ओ भाया वणियारा पुर्‌या, मेखे छुन्जर्‌या घड़ाई दे।
ओ भाया ममार–ममार घड़ रे मारी भर जुवानी जाय
ओ पुरी ममार–ममार घडुओं काँ जाणे बाजी रोही
ओ भाया ममार–ममार घड़ रे मी भंगर्‌यो भाळणे जाओं।
ओ भाया पुतळ्यारा पुर्‌या, मेखे पुतल्या आपी दे
ओ भाया दर्जीरा पुर्‌या मेखे आंगल्या बोणाई दे।
ओ भाया ममार–ममार सीव रे मारी भर जुवानी जाय।
ओ पुरी ममार–ममार सीव ओ काँ जाणे बाजी रोही
ओ भाया ममार–ममार सीव रे पानी बीड़ो खाणे जाओं।
ओ भाया मादळ्यारा पुर्‌या मेखे खासड़ा आपी दे
ओ भाया कुटवाळ्या पुर्‌या मेखे खासड़ा आपी दे।
ओ भाया ममार–ममार आप रे, मारी भर जुवानी जाय
ओ पुरी ममार–ममार आपों काँ जाणे बाजी रोही
ओ भाया ममार–ममार आप दे, मैं नाचणे–कुदणे जाओ।।

शब्दार्थ : सोनीड़ा = स्वर्णकार, **मेखे** = मुझे, **घड़ाई** = बनाना, **वणियारा** = बनिया, **ममार** = शीघ्र, **पुतळ्यारा** = दर्जी, **पुतल्या** = कपड़े, **मादळ्यारा** = मांदल बजाने वाला।

हे सुनार भाई के लड़के! मेरे आभूषण शीघ्र बना दीजिए। तुम देरी मत लगाओ, तुरंत मुझे बनाकर दीजिए। मेरा यौवन निकला जा

रहा है। अरे लड़की! इतनी भी जल्दी क्या है, थोड़ा धैर्य रखो। अभी बना रहा हूँ। अरे ओ दर्जी के लड़के! जल्दी से मेरे कपड़े सिल दो। देखते नहीं हो क्या मेरा यौवन निकला जा रहा है।

तारा खिसा मा कांगसू ने मारा खिसा मा आरसू
चाल ओ गोरी अदले–बदले, बदले–अदले कोरी ले।
तारा हाथे मा लाकड़ी ने मारा हाथे मा काकेड़ी
चाल ओ गोरी अदले–बदले, बदले–अदले कोरी ले।
तारा हाथे मा रातलो रूमाल, मारा हाथे मा रातलो पान
चाल ओ गोरी अदले–बदले, बदले–अदले कोरी ले।
तारा हाथे मा ताड़ी छे ने मारा हाथे मा उळखी
चाल ओ गोरी अदले–बदले, बदले–अदले कोरी ले।
तारा पाँय में घूघेरा ने मारा गळा मा मांदेळो
चाल ओ गोरी अदले–बदले, बदले–अदले कोरी ले।
तारा घोरे मा बुकड़ा ने मारा घोरे मा डोगड़ा
चाल ओ गोरी अदले–बदले, बदले–अदले कोरी ले।
बुकड़ा चरासू नानी डोगेड़ा चरासू ओ
चाल ओ गोरी अदले–बदले, बदले–अदले कोरी ले।।

शब्दार्थ : खिसा = जेब, **कांगसू** = कंघा, **आरसू** = दर्पण, **काकेड़ी** = ककड़ी, **रातलो** = लाल, **डोगेड़ा** = पशु।

तेरे जेब में कंघा और मेरे जेब में दर्पण है। चल इन्हें आपस में बदल लेते हैं। तेरे हाथ में लकड़ी है और मेरे हाथ में ककड़ी है। तेरे हाथ में लाल रुमाल है और मेरे हाथ में लाल पान है। तेरे हाथ में ताड़ी है और मेरे हाथ में पीने का पात्र है। तेरे घर बकरियाँ और मेरे घर मुर्गियाँ हैं। चल इन्हें आपस में बदल लेते हैं। जो तेरे पास है वो मुझे दे और जो मेरे पास है वो तू ले–ले।

उन्डो कुवो न मुखड़ साकड़ो रे वाला
मैं रे बणजारी परदेश मा रे वाला।
झांझर्या पेरी न घूमर घुमसू रे वाला
मैं रे बणजारी परदेश मा रे वाला।
तागल्या पेरी न घूमर घुमसू रे वाला
मैं रे बणजारी परदेश मा रे वाला।
घुघर्या पेरी न घूमर घुमसू रे वाला
मैं रे बणजारी परदेश मा रे वाला।
झुमच्या पेरी न घूमर घुमसू रे वाला
मैं रे बणजारी परदेश मा रे वाला।
उन्डो कुवो न मुखड़ साकड़ो रे वाला
मैं रे बणजारी परदेश मा रे वाला।
उन्डो कुवो न मुखड़ साकड़ो रे वाला
मैं रे बणजारी परदेश मा रे वाला।।

शब्दार्थ : मुखड़ = मुख, **झांझर्या** = झांझर, **घूमसू** = घूमना, **बणजारी** = बंजारन।

कुआँ बहुत गहरा है, लेकिन उसका मुख सँकरा है। पैरों में झांझर पहनकर मैं नृत्य करुँगी। मैं बंजारन परदेश में हूँ। मैं गले में तागली पहनकर नृत्य करुँगी। घूँघरे पहनकर भी नृत्य कर सकती हूँ।

वीरकी दे न धीरकी दे
जमुना घड़िक टोकोराळी दे,
दा नाहर्या क मारी न
भाभी तुखे राखी ले ।।

शब्दार्थ : नाहर्या = नहार, **राखी =** रखना।

वीरकी और धीरकी दे। नहार को मारकर नहार की पत्नी को रख लूँगा।

वाड़ी मा वायो वटलो, उंजी सणबोर ओ
हामू ने न्हाछ्या दोळ, जोगी न न्हाछ्या लोटिया।
विदिळा पेरई दऊँ ओ चतुर पणियारी
अळतेन नथी आओ रे पांथ्या भाया जोगी।
पेरई ने बताड़ो ओ चतुर पणियारी
झुमच्या पेरई दऊँ ओ चतुर पणियारी।
अळतेन नथी आओ रे पांथ्या भाया जोगी
पेरई ने बताड़ो ओ चतुर पणियारी।।

शब्दार्थ : वाड़ी = खेत, **न्हाछ्या** = डाले, **वटलो** = मटर, **अळतेन** = फिर, **नथी** = नहीं, **बताड़ो** = बताऊँ।

खेत में मटर बोये, पर उगी दूर–दूर। आओ तुम्हें बिंदिया लगा दूँ। आओ तुम्हें झूमके पहना दूँ। अरे ओ चतुर पनहारिन! थोड़ी पास तो आओ।

घाटो चोहढ़ी ने पार जामू वल्ली रूमली
घाटो चोहढ़ी ने पार जासू रे लोल।
डडाळ्यो बोकड़ो ने बारवाटी रो दारूड़ो
ओ मारी लई ओ, अंद्यारी रात नो छाक्यो रे लोल।
निंडाइलो बोकड़ो ने महुड़ा नो दारूड़ो
ओ मारी लई ओ, अंद्यारी रात नो छाक्यो रे लोल।
खाता–पीता ना पार जासू वल्ली रूमली
ओ मारी लई ओ, अंद्यारी रात नो छाक्यो रे लोल।।

शब्दार्थ : डडाळ्यो = दाढ़ी वाला, **अंद्यारी** = अंधेरी, **दारुड़ो** = दारु, **चोहढ़ी** = चढ़कर, **महुड़ा** = महुआ।

घाट चढ़कर उसके पास जायेंगे। दाढ़ी वाला बकरा खायेंगे। मन भरकर दारु पीयेंगे। अंधेरी रात में दारु का नशा चढ़ गया। खाते– पीते उस ओर जायेंगे।

बणजारा कावेरी रूमाल रे मामा–भाणिज
ये जोड़ी पोरदेशी आई रे लोल।
जे जोड़ी तारे ती नी टूटे रे मामा–भाणिज
जे जोड़ी तारे ती नी टूटे रे लोल।
जे जोड़ी कळाली मा आई रे मामा–भाणिज
वणजारा कावेरी रूमाल रे मामा–भाणिज।
जे जोड़ी मांदळ पोर छमू–छू नाचे
जे जोड़ी मांदळ पोर नाचे रे लोल।
जे जोड़ी घेर पोछी आवी रे मामा–भाणिज
जे जोड़ी घेर पोछी आवी रे लोल।।

शब्दार्थ : **बणजारा** = बंजारा।

हे बंजारे भाई! मामा–भान्जे की जोड़ी देखिये। ये जोड़ी कभी नहीं टूटेगी। ये जोड़ी कलारी में आयी। ये जोड़ी मांदल पर नाचती है।

आंबानी डाळ धोरी न दड़पी दऊं
ओ नानी डोगायजी मती ओ।
बोले ते बोलवा भारी ओ
ओ नानी डुळा मटकाड़े ओ।
सोन्डवा नू भगुरया बताड़ो ओ
ओ नानी डोगायजी मती ओ।

गलती ते मारा ती हुई गुई
ओ नानी डोगायजी मती ओ।
डडाळ्यो बुकड़ो नी खाओ मैं
ओ भाया पेटज फूगे रे।।

शब्दार्थ : **डाळ** = डाली, **डोगायजी** = रुष्ट।

आम की डाली को दबा दूँ। अरे ओ लड़की! तुम नाराज मत होना। तुम इस तरह आँखें क्यों मटका रही हो। गलती तो मुझसे हो गयी, पर तुम रुठना मत। तुझे सोन्डवा का भगोरिया दिखाऊँगा। दाढ़ी वाला बकरा भी खिलाऊँगा। तुम रूठना मत।

काळी चिड़ी तू घणी नोखराली ओ
काळी चिड़ी तू नजर नी आई ओ।
नानी तारी ओड़नी सुहानी ओ
काळी चिड़ी तू घणी नोखराली ओ।
नानी थारी नोथणी सुहाणी ओ
काळी चिड़ी तू घणी नोखराली ओ।।

काली चिड़ियाँ तुम बहुत नखरे दिखाती हो। तुम्हारी ओड़नी बहुत सुहानी है। तुम्हारी नथनी भी सुहानी है।

ऊँची पिपरी नीची डाळे, पपीरा खाणे रड़े ओ
आयणी तर्हो डाहलो लाडो, पीपरा खाणे रड़े ओ।।

शब्दार्थ : **नीची** = नीचे, **ड़ाळे** = डाली, **खाणे** = खाने, **डाहलो** = वृद्ध।

पिपरी का पेड़ बहुत ऊँचा है। उसकी डालियाँ बहुत नीचे हैं। समधन तुम्हारा वृद्ध पति पिपरी खाने को रो रहा है।

मारो उंडो कुओं ओ माई साकड़ो घणो
मैं ते डालचो न्हाखो ते खखड़े घणो।।

शब्दार्थ : **मारो** = मेरा, **उंडो** = गहरा, **साकड़ो** = सँकरा, **डालचो** = बाल्टी, **खखड़े** = बजती है।

मेरा कुआँ गहरा है, पर बहुत सकरा है। जब बाल्टी डाली जाती है तो बहुत बजता है।

बोइड़ी पोर बोरी ने रांड, खाड़ा मा बोरा खावेली
दिसरा गाँव नी रान्डे, भाया ने रवा करी आवेली।।

शब्दार्थ : **बोइड़ी** = पहाड़ी, **बोरी** = बेर, **खाड़ा** = गड्ढा, **खावेली** = आना।

पहाड़ी पर बेर का पेड़ है, पर वह लड़की गड्ढा में बेर के फल खाने आयी थी। वो तो मेरे भाई के घर रहने को कह रही है।

केसवड्या ना फूल ती बइड़ो फूलई गुयु ओय
अगळ–पछल खिसली पोड़ी छेवड़ो छिलई गुयु ओय।।

शब्दार्थ : **केसवड्या** = केसर, **बइड़ो** = पहाड़, **फूलई** = खिलना, **गुयु** = गया, **अगळ** = आगे, **पछळ** = पीछे, **खिसली** = फिसलना।

पलाश के फूलों से पहाड़ खिल गया है। आगे–पीछे फिसल गया तो मेरी कमर छिल गयी।

लीलो–पेळो पांगरो रंगली गोफन सर सुदा नो फुन्दो
मारो गोफन गोळो ते हो्या नो टोळो।।

शब्दार्थ : **गोफन** = पत्थर फेंकने की रस्सी, **गोळो** = गोल पत्थर, **हो्या** = पंछी।

मेरी गोफन नीली–पीली है और उसका फुंदा भी सुन्दर है। मेरी गोफन का पत्थर गोल है, जो पंछियों की टोली पर गिरेगा।

नाचणे–कूदणे घन टाटी
कामे कोहे हुमड़ो चढ़ाई ले दी ओ।।

शब्दार्थ : नाचणे = नाचना–नाचने–कूदने को कहो तो सबसे पहले आ जाती हैं और काम का कहो तो मुँह बनाती है।

मारो गीते गाय लेदी ओ
मारी लाड़ी बणे की निहीं ओ।।

शब्दार्थ : मारो = मेरा, **लेदी** = लिया, **मारी** = मेरी, **लाड़ी** = पत्नी।

मेरा गीत गा लिया तो अब मेरी पत्नी बन जाओ।

फूंदा वाळी धोंधली मारी पीपरी ने छिदें चिरलो मारो
असु आमरो 'आठवा' वाळो नो नामे ओ।।

शब्दार्थ : धोंधली = धनुष, **चिरलो** = पंछी।

फुंदे वाली धनुष है मेरी। मैं इस धनुष से पंछियों को मार सकता हूँ। ऐसा हमारा गाँव है।

आरछा वाळो कुओ मारो
फूंदा वाळी बाल्टी ती पाणी लाओ।।

शब्दार्थ : आरछा = दर्पण, **वाळो** = वाला, **लाओ** = लाना।

दर्पण वाला मेरा कुआँ है। फूँदे वाली बाल्टी से पानी लाता हूँ।

हिना गाँवो नो समड़ो साकड़ो रे लोल
विक्रम भाई नी गाड़ी भड़कती जाय।।

शब्दार्थ : साकड़ो = सँकरा, **भड़कती** = बजना।

इस गाँव का मार्ग बहुत सँकरा है। विक्रमभाई की गाड़ी बजती–बजती जाती है।

खेड़ो ओ चणा नू खेत
वेरो ओ गेहूँ ना बीज
ड्रिरे लिलेरियो वेलो।।

शब्दार्थ : खेड़ो = खेत में जुताई, **वेरो** = बुआई।

खेत में जुताई कीजिए और गेहूँ के बीजों की बुआई कीजिए।

खिणी–खिणी घूघरा वागे
काँ गुताड़ी आई ओ तारी आई ओ ड्रिक।
मारो भायो हेरने गुयु
कुणज्या मा डुकाई रोहली तारी आई ओ ड्रिक।।

शब्दार्थ : गुताड़ी = उलझाना, **हेरने** = ढुँढने, **डुकाई** = छुपना, **कुणज्या** = बकरियों का स्थान।

खन–खन घुँघरू बज रहे हैं। इन्हें कहाँ उलझा आई। जब मेरा भाई तुम्हें ढुँढने गया तो तुम कहाँ छुप गयी थी?

नाचणे मारो कइड़ो मन ओ
घूघरा मारा पेटी मा रोही गुया ओ
नी माने ते मा मान ओ
भाळना वाळी ना डुळा मा काकेरा ओ।।

शब्दार्थ : नाचणे = नाचना, **मारो** = मेरा, **कइड़ो** = कठोर, **रोही** = रहना।

मेरा मन नाचने के लिए उत्सुक है, पर क्या करुँ? मेरे घूँघरे पेटी में रह गये हैं। नहीं मानो तो मत मानो। देखने वालों की आँखों में कंकरिया।

खान्धे धोरिया भोळो–भोळो

सणबुरिया मा सुधी वाटे पाड़ो ओ।
नी माने ते पूछी ले ओहणी
मारो आरछा वाळो घेर ओ।।

शब्दार्थ : सणबुरिया = सराबोर, **आरछा** = दर्पण।

कंधे पर धरिया रखा हुआ है। मेरा घर दर्पण जैसा है। नहीं मानो तो मत मानो, मेरा घर दर्पण वाला है।

आंबा रे तारी वाकी डाळ, लीमड़ा रे तारा फूला रे
फूलका डगळ वाळा हामू 'राठ' ना जुवाण्या।
जो भाळे चाँ झिकर्या दगड़ा, जाँ भाळे चाँ पलास्या
आड़ी ओ टेड़ी काई भाळे ओ दूर नी नजर भळाणो ।
वाट पोर खाटली पाड़ी, गाड़ीवालो आयो रे
गाड़ी वाळो बीही गुयु, मैं नी बीहणे वाळी रे।।

शब्दार्थ : वाकी = बाँकी, **लीमड़ा** = नीम, **झिकर्या** = चकमक, **पलास्या** = पलाश।

आम की डालियाँ बाँकी हैं। नीम के ऊपर फूल हैं। हमारे कमीच पर फूल बने हैं। हम राठ क्षेत्र के रहने वाले हैं। तिरछी दृष्टि से क्या देखती हो? मैंने रास्ते पर खटिया रख दी। गाड़ी वाला आया तो डर गया, पर मैं जरा भी नहीं डरा।

टीकी मारी टीकी भळाए ओ,
टीकी रोहोय गुई पोलांग पोर,
आयणी मारी आयणी भळाए हो,
आयणी मारी रोहोय गुई पोलांग पोर।।

शब्दार्थ : टीकी = बिन्दिया, **रोहोय** = रहना।

मेरी बिन्दिया बहुत दूर रह गयी। समधन तुमने देखी है क्या?

ऊँचो कोधो टेमरो,
टमाटेरियो बोईडो रोंगाई रोलो,
नी माने ते मा माने
टमाटेरियो बाईडो रोंगाई रोलो
हसा हमरो नाव रे भाया,
हसो उबेलेडिया ने नावे।।

शब्दार्थ : टेमरो = टेमरु, **टमाटेरियो** = टमाटर।

टेमरु का पेड़ बहुत ऊँचा है। टमाटर से पहाड़ रंगीन दिख रहा है।

रिझो काटो बुकड़ी चोरे,
डेगो काटो आहेणी नू जमाड़ो
नी माने ते मा माने
डेगो काटो आहेणी नू जमाड़ो।।

शब्दार्थ : बुकड़ी = बकरी, **जमाड़ो** = मारना।

बबूल का पेड़ काटकर पत्तियाँ बकरी को खिलाऊँ। लकड़ी काटूँ जिससे समधन को मारुँ।

आहेणी ते सुई गुई
जाम्बू तले ओ राई
केनदेरियो ओ झोला में
जाम्बू तले ओ राई।।

शब्दार्थ : सुई = साना, **जाम्बू** = जामुन।

समधन तो जामुन तले सो गयी है। उसे यहाँ पर सोना अच्छा लगता है।

बोईड़ी पोर रायणी चुपी,
जाय घुणी ओ रायणा खाणे
कोहड्याम धोरिन मोसकी देसे,
जाय घुणी ओ रायणा खाणे।।

शब्दार्थ : रायणी = खिरनी, **मोसकी** = मसलना।

पहाड़ी पर खिरनी का पेड़ है। वहाँ खिरनी खाने मत जाना, नहीं तो वहाँ से उठा लिया जायेगा।

वाटे पोर वासेणी,
तेरे पोछोल तेहरे बिलखी छुड़ो ओ
अगळ–पछळ होजी मती,
धोंधली मारी वारू।।

शब्दार्थ : अगळ = आगे, **पछळ** = पीछे, **धोंधली** = धनुष।

रास्ते पर बाँस हैं। आगे–पीछे मत होना, क्योंकि मेरा धनुष बहुत अच्छा है।

भंगरियो भाळणे पोयश्या आपला,
आहेणी काहा रोड़े ओ
आहेणी काहे रोड़े ओ
मारू जीवड़ो डोहे ओ।।

शब्दार्थ : भंगरियो = भगोरिया, **भाळणे** = देखने, **पोयश्या** = पैसे।

भगोरिया देखने के लिए पैसे दे दिये, फिर क्यों रो रही हो? तुम रोती हो तो मुझे दुःख होता है।

नहदी धोड़े रोहणो छे,
नहदी धोड़े रोहणो छे,

केकड़ो डरावे बीही लागे
ओ काय ओ काय।।

शब्दार्थ : नहदी = नदी, **धोड़े** = पास में, **केकड़ो** = केकड़ा, **बीही** = डर।

नदी के पास रहना है। केकड़े बहुत डराते हैं ।

बोयड़ा धोड़े रोहणो छे,
बयड़ा धोड़े रोहरणो छे,
नहार बीहाड़े बीही लागे ओ,
काय ओ काय।।

शब्दार्थ : नहार = सिंह, **बीहाड़े** = डराता है।

पहाड़ के पास रहना है। सिंह डराता है तो क्या करें?

दाथेली लावी ने
रिन्झो काटे रे नानुड़ा,
वारू–वारू पाठेड़ी
बोकारीले रे नानुड़ा
ढाहेली भाली ने
धोको मारी दे रे नानुड़ा।।

शब्दार्थ : दाथेली = दराता, **रिन्झो** = बबूल।

दरांता लाकर बबूल काटना है। अच्छी–अच्छी डालियों को काट लो।

शकर लिमेड़ी ओ
लिमड़ी लोहरा ले,
आहणी मोटेकाली ओ

लाडो हेरी रोय।।

शब्दार्थ : शकर लिमेड़ी = नारंगी, **मोटेकाली** = मटकना।

नारंगी का पेड़ लहरा रहा है। लड़की मटक रही है। पति ढूँढ रहा है।

पाँचे ओ रूपया नी
लेधी ओ घूघेरी
आहेणी तारा ओ कोहड़िया मा
खेलो ओ घूघेरी
भाया धिरो रे मोसोक
बागे ओ घूघेरी।।

शब्दार्थ : लेधी = लेना, **कोहड़िया** = बाँह।

पाँच रुपये की घूघरी ली। लड़की तेरी बाँहों में घूघरी बज रही है।

जुनला गीते नी गाओ,
नोवला गीते फुरू–फुरू आवे
नी माने मा माने
नोवला गीते फुरू–फुरू आवे।।

शब्दार्थ : जुनला = पुराने, **नवला** = नये।

पुराने गीत मत गाओ। नये गीत तो बहुत शीघ्र आते हैं ।

आरसियो नाखों भगलो नाखों
जा भाळे चां लाल टीकीवाळी,
नी माने ते मा माने
जा भाळे चां लाल टीकीवाळी।।

शब्दार्थ : आरसियो = दर्पण, **भगलो** = दर्पण का प्रकाश, **नाखों** = डालना, **टीकीवाळी** = बिन्दिया वाली।

दर्पण का प्रकाश जहाँ–जहाँ डालता हूँ, वहाँ–वहाँ लाल बिन्दिया वाली दिखती है।

सागे ने सुटो
ऊरो नी डोले ने पोरो डोले,
आहेणी रान्ड
ऊरो नी भाळे ने पोरो भाळै।।

शब्दार्थ : सागे = सागवान, **ऊरो** = इधर, **पोरो** = उधर।

सागवान का पेड़ इधर नहीं डोलता, उधर डोलता है। लड़की इधर नहीं देखती और उधर देखती है।

विवाहिक गीत

नीळो हुर्‌यो नीळठा मा ने,
पेळो हुर्‌यो पांजरा मा बुले ओ।।

शब्दार्थ : नीळो = हरा, **हुर्‌यो** = तोता।

हरा तोता हरियाली में और पीला तोता पिंजरे में बोलता है।

पेला बोवल्या ओदावजी,
तेरे पछल पावर काजे ओदावजी।।

शब्दार्थ : पेला = पहले, **बोवल्या** = बैल, **पावर** = नौकर।

पहले बैलों का पूजन करना, उसके बाद गाड़ीवान का पूजन करना।

बैल खाये खिचड़ी ने
पावर चावे नाडो।

शब्दार्थ : खाये = खाना, **पावर** = नौकर, **चावे** = चबाना, **नाडो** = रस्सी।

बैलों को खिचड़ी खिलाना। बैल खिचड़ी खाते हैं। गाड़ीवान तो रस्सी चबाता है। उसे खिचड़ी मत खिलाना।

आखी नदी नू वेलठो लायो
तारा लाकड़ा मेलों
आखा बोजारे नू खिपरा लायो
तारा लाकड़ा मेलों।

शब्दार्थ : वेलठो = रेत, **आखा** = पूरे, **तारा** = तेरा, **खिपरा** = खोटे पैसे।

पूरी नदी की रेत ले आये हो। पूरे बाजार के खोटे सिक्के ले आये हो।

बनी नू भाई बोठो रे
जाणो वाणिलो बोठो ओ
लाडा नू भाई बोठो रे
जाणो माकड़्यो बोठो ओ।।

शब्दार्थ : वाणिलो = बनिया, **बोठो** = बैठा, **माकड्या** = बंदर, **जाणो** = जानना।

लाड़ी का भाई बैठा है, पर ऐसे लग रहा है कि बनिया का बेटा हो। वहीं लाड़े का भाई बैठा है, पर ऐसे लग रहा है जैसे बंदर बैठा हो।

नेचे मा भाळे रे डेढ्या
धरती मारी वाणिंगली
ऊँचो मा भाळे रे डेढ्या
सारिग मारो वाणिंगलो।।

शब्दार्थ : नेचे = नीचे, **भाळे** = देखना, **सरिग** = स्वर्ग।

नीचे मत देखो, मेरी धरती बहुत अच्छी है। ऊपर मत देखो, मेरा आकाश बहुत अच्छा है। ये गंदे हो सकते हैं, तुम्हारे देखने से।

सांझा तारी बायरी क
डेंडळो ली जाय
सळ–सळ करतो,
खुदरे ली जाय।
सांझा तारी बायरी क
उंदरो ली जाय
खिड़ी–खिडी करतो,
बमड़े ली जाय।।

शब्दार्थ : बायरी = महिला, **डेंडळो** = डूँडा, **खुदरे** = नाला, **उंदरे तारी** = तेरी।

सांझा तेरी स्त्री को डूँडा नाले पर ले जाये। तुम्हारी महिला को चूहा मंगरे पर ले जाये।

डान्डे–डान्डे उतर ओ
छाईछुन्दरी
रमस्या नी मूँछ कतर ओ
छाईछुन्दरी।।

शब्दार्थ : छाईछुन्दरी = छछून्दर, **कतर** = कुतरना, **रमस्या** = रमेश।

अरे ओ छछून्दर! तुम लकड़ियों से उतरकर नीचे आओ और रमेश की मूँछों को कुतरो।

साझां तारी पावळी
तिरी–विरी वाजे
पावळी गुई फूटी
ने होठ गुया टूटी ने

मेल दऊं तारा लाकड़ा,
रोखड़ो उड़ी जासे।
डोळा तारा फुटला ने
कान तारा टुटला ने
मेल दऊं तारा लाकड़ा,
रोखड़ो उड़ी जासे।।

शब्दार्थ : पावली = बाँसुरी, **तिरी विरी** = बेसुरी, **मेल दऊं** = रख दूँ, **रोखड़ो** = राख।

सांझा तुम्हारी बाँसुरी बेसुरी बज रही है। बाँसुरी फूट चुकी है और होंठ टूट गया है। तेरी आँखें फूटी हैं और कान टूटे हुए हैं।

तारहो माटी दिनेश
धवळ्या धुरी मंगाड्यो
खांड्यो–मेन्ड्यो
काह लायु।
तार्हो माटी दिनेश
चाऊल मंगाड्यो
टेमरा काह लायु ।
तार्हो माटी दिनेश
घींवे मंगाड्यो
तेले काह लायु।।

शब्दार्थ : धवळ्या धुरी = सफेद जोड़ी, **खान्ड्यो मेन्ड्यो** = उबड़ खाबड़, **चाऊल** = चावल, **घींवे** = घी।

दिनेश तुमको कहा था कि अच्छे बैल लाना, पर तुम उटपटांग बैल ले आये। तुम्हें कहा था कि चावल लाना, पर तुम टेमरु ले आये। तुम्हें कहा था कि घी लाना, तो तुम तेल ले आये।

बोठो इहाई बोठो,
कुसेली ताती कोरो
याही तारे.....,
ठेलो वाळदी कराड़ो।।

शब्दार्थ : बोठो = बैठिये, **कुसेली** = कुसला, **ताती** = गरम।

बैठो समधी, अभी लोहा गरम करते हैं और तुम्हें निशानी लगाते हैं।

बोठी जाओ रे बाठी जाओ,
कालगा हिजड़ा ने गधड़ा
गडो–गडो आइज्या,
भाया न साळा हिजड़ा ने गधड़ा
माकड्यो तोसा भाळे,
भाया न साळा हिजड़ा ने गधड़ा
कुतरा तोसा लागे,
भाया न साळा हिजड़ा ने गधड़ा।।

शब्दार्थ : माकड्या = बंदर, **तोसा** = जैये, **गधड़ा** = गधे।

बैठ जाओ गधों। भीड़ लेकर आ गये गधे। बंदर के समान लग रहे हैं। मेरे भाई के साले! कुत्ते के समान तो दिखते हो।

काचा रे सूते न
जाळे विणाड़ो रे डेढ्या
नी विणे ते लाते
जमाड़ो रे डेढ्या।
ऊंडा रे तालाब मा

माछली पकड़ाड़ो रे डेढ्या
नी रे पोकड़े ते लाते
जमाड़ो रे डेढ्या।।

शब्दार्थ : काचा = कच्चे, **सूते** = धागा, **जाळे** = जाल, **ऊंडा** = गहरा, **लाते** = पैर, **माछली** = मछली।

कच्चे सूत की जाल बनवानी पड़ेगी। नहीं बनाये तो लात मारनी पड़ेगी। गहरे तालाब में मछली पकड़वानी पड़ेगी। नहीं पकड़े तो लात जमानी पड़ेगी।

एक नेवतो देजे
गुणेसा घोरे
ते गणपति बाबो आवसे।
एक नेवतो देजे
महादेव घोरे
ते महादेव बाबो आवसे।
एक नेवतो देजे
खेड़ादेती घोरे
ते गंगा ने गवरा आवसे।
एक नेवतो देजे
थानक घोरे
ते रूळी बाबा देव आवसे।
एक नेवतो देजे
सबुन घोरे
ते चुकता मांडसे आवसे।।

शब्दार्थ : नेवतो = निमंत्रण, **गवरा** = पार्वती, **थानक** = स्थानक, चुकता = सब।

एक निमंत्रण गणपति जी के घर देना, ताकि गणपति जी आयेंगे। एक निमंत्रण महादेव जी के घर देना, ताकि महादेव जी आयेंगे। एक निमंत्रण खेड़ादेती के घर देना, ताकि गंगा और गवरा आयेंगी। एक निमंत्रण देना स्थानक पर, ताकि रुळी बाबा भी आ रुकें।

आखो हरियाळी डुंगर,
काली कोयल बुले बेना
आवसे तारा फूवा नी जुड़ी,
सरम्यो कागद भेजो बेना।
आखो हरियाळी डुंगर,
काली कोयल बुले बेना
आवसे तारा मामानी जुड़ी,
सरम्यो कागद भेजो बेना।
आखो हरियाळी डुंगर,
काली कोयल बुले बेना
आवसे तारा माउसा नी जुड़ी,
सरम्यों कागद भेजो बेना।
आखो हरियाळी डुंगर,
काली कोयल बुले बेना
आवसे तारी बोणसी जुड़ी,
सरम्यों कागद भेजो बेना।।

शब्दार्थ : आखो = सम्पूर्ण, **डुगर** = पहाड, **आवसे** = आयेंगे, **फूवा** = फूफा, **बोणसी** = बहन।

हरे–भरे पहाड़ में काली कोयल बोल रही है। तुम्हारे फूफा की जोड़ी विवाह में आयेगी, तुम निमंत्रण–पत्र भेजो। तुम्हारे मामा की

जोड़ी भी आयेगी, उन्हें भी निमंत्रण–पत्र भेजो। तुम्हारे मौसा जी की जोड़ी भी आयेगी, उन्हें भी पत्र भेजो। तुम्हारे जीजाजी और जीजी भी आयेंगे, उन्हें भी निमंत्रण–पत्र भेजो।

हळदी पिसाये ओ
हळदुली राजा ओ
हळदी ते घट्टी मा पिसाये
हळदुली राजा ओ।।

हल्दी को तोला जाता है। हल्दी को पीसा जाता है।

आधो किलो हळदी ने
आधो किलो मेहन्दी
ताकड़े तुलाये बेना,
ताकड़े तुलाये।।

शब्दार्थ : ताकड़े = तराजू।

आधा किलो हल्दी और आधा किलो मेहन्दी विवाह में लाये हैं। ये हल्दी और मेहन्दी वर को लगायेंगे। देखिये, सब खुश होकर तौल रहे है।

मालवे ती हळदी ते बुलाई,
पुड़ी बोधाई,
मालवे ती हळदी बुलाई,
ताकड़ी तुलाई।
मालवे ती हळदी बुलाई,
घट्ये पिसाई।
मालवे ती हळदी बुलाई,

वाटके घुळाई।।

शब्दार्थ : घट्ये = घट्टी, **ताकड़ी** = तराजू।

मालवा से हल्दी बुलायी है, जिसे पुड़िया में बाँधकर लाये हैं। उस हल्दी को तराजू में प्रसन्नता से तोला भी गया। फिर उस हल्दी को घट्टी में पीसा। उसके बाद कटोरे में घोला गया, ताकि वर को लगा सकें।

आयणी चोके पाड़े
हेटे तारा गिणे।।

शब्दार्थ : आयणी = समधन, **चोके** = स्वस्तिक, **हेटे** = निचे, **गिणे** = गिनना।

समधन नीचे स्वस्तिक चिन्ह बनाती है और तारे भी गिनती है।

उरकेड़े जीरो वायो रान्डे
वारू कोरी रोही ओ।।

शब्दार्थ : उरकेड़े = कूड़ा, **कोरी** = करना।

कूड़े–कर्कट में जीरे की बुआई की गयी । कितना अच्छा काम किया गया है।

उरकेड़े धाने वायो रान्डे
वारू कोरी रोही ओ।।

कूड़े–कर्कट में धान की बुआई की गयी, कितना अच्छा काम किया गया है।

नीळी–नीळी डोळाटी
चराओ बोचेरे

बोचेरी के पाणीला
पिलाओ बोचेरे।।

हरी–भरी घास खिलाओ। घास खिलाने के बाद पानी पिलाइये।

बेनांगे कुणे कोह्यो ने
गोदड़िये बोठो नाहेला बेना
बेनांगे कुणे कोह्ये ने
गोदड़िये बोठो नाहेला बेना
बेनांगे बासे कोह्यो ने
गोदड़िये बोठो नाहेला बेना
बेनांगे भाई कोह्यो ने
गोदड़िये बोठो नाहेला बेना
बेनांगे कुणे कोह्यो ने
गोदड़िये बोठो नाहेला बेना
बेनांगे काको कोह्यो ने
गोदड़िये बोठो नाहेला बेना।।

शब्दार्थ : बेनांगे = वर को, **कोह्यो** = कहा, **गोदड़िये** = गोदड़ी, **नाहेला** = नूतन।

वर को किसने कहा जो वह गोदड़ी पर बैठा। वर को उसके पिता ने कहा और वह विवाह के लिए राजी हुआ। उसके भाई ने कहा और वह विवाह के लिए गोदड़ी पर बैठा। वर को उसके काका ने कहा और वह तैयार हुआ।

बेनीगे कुणे कोह्यो ने
गोदड़िये बोठी नाहेली बेनी
बेनीगे भाई कोह्यो ने

गोदड़िये बोठी नाहेली बेनी
बेनीगे कुणे कोह्यो ने
गोदड़िये बोठी नाहेली बेनी
बेनीगे बासे कोह्यो ने
गोदड़िये बोठी नाहेली बेनी।।

वधु को उसके भाई ने विवाह की अनुमाति दी। वधू को उसके पिता ने विवाह के लिए राजी किया।

तेले पीठी चवेरी रे
गोरा बेना
आयणी रान्डे खाई गुई
छाबो भोरी पापड़े रे।।

शब्दार्थ : तेले = तेल, **पीठी** = मलने की वस्तु, **पापड़े** = पापड़।

हमारा वर बहुत सुन्दर है। बहुत गोरा है। तेल और पीठी उसके शरीर पर लगायेंगे। समधन को देखो तो पापड़ खा गयी।

ताम्बा नो हान्डो
ततलो मेक्यो पाणी
उंघळणे बोठो ओ
लाटेकलो बेनो।।

शब्दार्थ : हान्डो = पानी का पात्र, **ततलो** = गर्म, **मेक्यो** = रखा, **उंघळणे** = स्नान, **लाटेकलो** = प्रिय।

ताम्बे का पात्र है, जिसमें गर्म पानी है। हमारा प्यारा वर स्नान करने के लिए बैठा है।

हामू कुकड़ी नी खाता,
हामू बुकड़ी नी खाता
हामू नहदी धोड़े
बामण्या बोण्या रे लोल
हामू बोठी भोरी दारू
ली लेसू रे लोल।।

शब्दार्थ : हामू = हम, **कुकड़ी** = मुर्गी, **बुकड़ी** = बकरी, **नहदी** = नदी, **बामण्या** = ब्राम्हण, **दारु** = मदिरा, **लेसू** = लेना।

हम मुर्गी नहीं खाते। हम लोग बकरी भी नहीं खाते। हम लोग नदी किनारे के ब्राम्हण बन गये हैं। हम तो केवल दारु लेते हैं।

हामू कुकड़ी नी खाता
हामू बुकड़ी नी खाता
हामू नहदी धोड़े
बामण्या बोण्या रे लोल
जो ते कालगो दिनेश
ठगोरो ठोगी लेदो रे लोल।।

हम लोग मुर्गी और बकरी कुछ भी नहीं खाते। हम लोग शाकाहारी बन गये। ये जो दिनेश है, इसने हमें ठग लिया है।

दिनेश ने कोह्यो ने
दसु नागेड़ो दवड़्यो,
निहीं मान्यों ने
चुखा खाणे दवड़्यो।।

शब्दार्थ : कोह्यो = कहा, **दवड़्यो** = दौड़ा, **चुखा** = चावल, **खाणे** = खाने।

दिनेश ने कहा और सारी गड़बड़ हुई। वो नहीं माना और चावल खाने दौड़ा।

खेड़ी–खेड़ी काई
रेते कोर्‌या
जड़ी गुयो
मेहन्दी नू बीज
हाते रोंग्या
ने पाँय रोंग्य
रंग चुवे।।

शब्दार्थ : खेड़ी–खेड़ी = खेती करना, **रेते** = रेत, **जड़ी** = मिलना, **हाते** = हाथ, **रोग्या** = रंगे।

हमने इस प्रकार खेती की कि माटी को ठीक प्रकार से बारीक किया। वहाँ मेहन्दी के बीज बोये। मेहन्दी अच्छी फली– फूली और हमने उस मेहन्दी से हाथ–पैर रंगे।

काळी–काळी वाजळी
दुनिया भाळे
मारो बेनो भणेलो
चुपड़ी वाचे।।

शब्दार्थ : वाजळी = बदली, **भणेलो** = पढा–लिखा, **चुपड़ी** = पुस्तक।

काली–काली बदली को सारी दुनिया देखती है। मेरा बना पढ़ा–लिखा है, देखो वह पुस्तक पढ़ता है।

लम्बी वाट चली
जाजी रे गोरा बेना

काळका मन्दिर मा,
मन्दिर में जाजी
ने सेवा कोरजी,
माता–पिता की सेवा
कोरे रे गोरा बेना,
काळका मंदिर मा।।

वर जी आप रास्ते से एकदम आगे चले जाना। आगे कालका देवी का मंदिर है। मंदिर में जाकर कालका माताजी की सेवा करना।

बेनांगे मामो आइयो
ने काई लाइयो,
बेनांगे मामो आइयो
ने ढोलगिया–फेफरिया लाइयो।।

शब्दार्थ : आईयो = आया, **लाइयो** = लाया।

वर के मामा आये, पर लाये क्या। ढोलगिया–फेफरिया लाये।

खेड़े–खेड़े जीरो वायो रान्डे
झाझो फिरी रोई ओ,
भरता ने भरता ने डोली पोढ़िया
हामू गोतिड़ो भरवा आया ओ।।

खेती की और जीरे का उत्पादन किया, राई की खेती भी ठीक हुई। हम लोग गोतिड़ा के लिए पानी लेने आये। इस पानी में सत आया और सिर डोलने लगा।

वइरा घर नी हाळदी,
गोरा बेना नू चोळसो

उन्डे कुवे नू कादेवड़ो,
काळी लाड़ी नू चोळसो।
वइरा घर नू तेल ओ,
गोरा बेना नू चोळसो
गाड़ी नू काळसो,
काळी लाड़ी नू चोळसो।।

शब्दार्थ : वइरा = बोहरा, **उन्डे** = गहरा, **कादेवड़ो** = कीचड़, **काळसो** = काला पदार्थ।

बोहरे के घर से हल्दी लाये जो गोरे वर को लगायेंगे। गहरे कुएँ से कीचड़ लाये जो काली वधू को लगायेंगे। बोहरे के घर से तेल लाये हैं, जो वर को लगायेंगे। गाड़ी का काला पदार्थ वधू को लगायेंगे।

बेनांगे कुणे
सिनगारियो ओ
बेनांगे पटलिया
सिनगारियो ओ।।

शब्दार्थ : कुणे = किसने, **सिनगारियो** = सिंगार किया, **पटलियो** = पटेल।

वर का सिंगार किसने किया। वर का सिंगार गाँव के पटेल ने किया।

पगा बाँधों रे बेना
टिलक कुण सवारसे
टिलक गुण सवारसे,
टिलक भाई सवारसे।
पगा बाँधों रे बेना

टिलक कुण सवारसे
टिलक गुण सवारसे,
टिलक काको सवारसे।।

शब्दार्थ : पगा = पगड़ी, **टिलक** = तिलक।

पगड़ी बाँध लो वर जी, तुम्हें तुम्हारे भाई तिलक लगायेंगे। तुम्हारे काका भी तिलक लगायेंगे।

बेना बाबो आवे ते
आड़ी जाजो रे
बेना सव आपे ते
छोड़ी देजो रे ।
बेना दस आपे ते
ओड़ी जाजो रे
बेना सव आपे ते
छोड़ी देजो रे।।

वर जी तुम्हारे ताऊजी आये तो तुम जिद करना और सौ रुपये भेंट स्वरूप दें तो जिद छोड़ना। दस रुपये में समझाने का प्रयत्न करेंगे, पर तुम जिद करना। सौ रुपये लेकर ही दम लेना।

मारी रंग रूपाली धोंधली ओ
चवर्‌यो रोमा चोट,
आयणी ढाज्यी ममार ढाज्यी ओ
चवर्‌यो रोमा चोट।।

शब्दार्थ : **मारी** = मेरी, **रूपाली** = रूपवाली, **धोधली** = धनुष, **ढाज्यी** = भागना, **ममार** = शीघ्र।

मेरा धनुष बहुत सुन्दर है। चवरी में नृत्य करना चाहिए। मेरा नृत्य देखकर समधन भाग गयी।

नाचणे मारो
कइड़ो मन ओ
घूघरा मारा
पेटी मा रोही गुया ओ।
नी माने ते
मा माने ओ
भाळना वाळी ना
डुळा मा काकेरी ओ।।

शब्दार्थ : नाचणे = नाचना, **कइड़ो** = पक्का।

नाचने के लिए मेरा मन पक्का है, क्या करुँ मेरे घूघरे पेटी में रह गये हैं। तुम चाहे मत मानो। देखने वाली की आँखों में किरकिरा।

सारो घरबार बास काजे
आप्यो बेना जी
ताळो दियो ने
कुची हाथ मा बेना जी
भाईस छोड़्यो ने
भोजाई साथे मा बेना जी,
सारो घरबार बास
काजे आप्यो बेना जी,
ताळो दियो ने
कुची हाथ मा बेना जी।।

शब्दार्थ : सारो = घर, **घरबार** = घर, **बास** = पिता, **आप्यो** = दिया, **कुची** = चाबी।

हमने तो सारा घर–परिवार पिता जी को सौंप दिया है। घर में ताला लगा दिया और चाबी हाथ में दे दी।

चाली–चाली ने
मारा बगुल्या दुखे
रोही गुयो गुड़ो,
कनवाड़े कतरेक दूर।।

शब्दार्थ : रोही = रहना, **कतरेक** = कितनी।

पैदल चल– चलकर हमें दर्द होने लगा है। गुड़ा और करवाड़ा गाँव और कितनी दूर है।

ऊपर ती थोड़ा भाळो
धामनोद नी गाड़ी आई रोही
धामनोद नी गाड़ी आई रोही,
भाई री जोड़ी आई रोही
भाई री जोड़ी आई रोही,
बोणिस नू जोड़ी आई रोही।।

देखिये, धामनोद से गाडी आ रही है। भाई की जोड़ी आ रही है।

लीमड़ा ने साहला मा बठो रे
मारो प्यारो बेनो,
पीपळा ने साहला मा बठो रे
मारो प्यारो बेना।।

नीम के छाँव में वर बैठा हुआ है। पीपल की छाया भी उसे अच्छी लगती है।

बेनाने कवळी ऊमर
तुसे काई भाळो रे

लाड़ी नी गडली ऊमर
तुसे काई भाळो रे।।

शब्दार्थ : कवळी = कोमल, **गडली** = बहुत आयु।

वर की अवस्था बहुत कम है, तुम उसे क्या देख रही हो । लाड़ी की अवस्था बहुत है।

तारे ठुकण्या माटी ने
माण्डवो ओ माण्डवे आई
तारे ठुकण्या माटी ने
माण्डवो ओ माण्डवे आई।।

तुम लोग मंडप में क्यों आई हो। तुम्हें लज्जा नहीं आती क्या।

आमू हजारे भोरिया ने
हामू झोपेले आई
आमू हजारे भोरिया ने
तारा माण्डवे आई।।

शब्दार्थ : **आमू** = हम, **भोरिया** = भरे, **झोपेले** = द्वार, **तारा** = तेरे।

हम लोग हजारों रुपये देकर तुम्हारे द्वार पर आये हैं। तुम्हारे मण्डप में आने से पहले हमने पैसे दिये हैं।

हजारे भोरती ते तारी.....,
जाती ओ आयणी
पोइशा भोरती ते तारी.....,
जाती ओ आयणी।।

शब्दार्थ : **भोरती** = भरती, **तरी** = तेरी, **पोइशा** = पैसे।

यदि हजारों रुपये देये तो तुम्हारी दशा खराब हो जाती।

हामू नी भोरिया
आमरो बेनो भाई भोरियो
हामू नी भोरिया
आमरो लाटेकलो भोरियो।।

शब्दार्थ : आमरो = हमारा, **बेनो** = वर, **लाटेकलो** = प्रिय।

हमने रुपये नहीं दिये। हमारे वर राजा ने पैसे दिये और हम उसके साथ यहाँ आये।

मारो भाई चोढ़ियो ने
उभेलित राखी ओ
धीरी ओ तारी धीरी ओ,
मारो भाई चोढ़ियो ने
बोसाड़ी देदी ओ
धीरी ओ तारी धीरी ओ।।

शब्दार्थ : मारो = मेरा, **चोढ़ियो** = चढ़ा, **उभेलित** = खड़े–खड़े, **बोसाड़ी** = बिठाना।

मेरे भाई ने खड़े–खड़े तुमसे विवाह कर लिया। देखते ही देखते तुम्हें बिठा लिया।

छोटी उम्बी ने
घऊं फोसला रे लोल
आइणींग कोरे ते
दस....., रे लोल।।

शब्दार्थ : उम्बी = गेहूँ की बालियाँ, **घऊं** = गेहूँ।

गेहूँ की बालिया छोटी हैं और गेहूँ कमजोर है। समधन से लगाव हो गया है।

बेनो बोयून लायो ने
गोळी साकेड़ी रे लोल
बेनो भोजाई लायो ने
गोळी साकेड़ी रे लोल।।

शब्दार्थ : लायो = लाया, **गोळी** = गली, **साकेड़ी** = सँकरी।

गली बहुत सँकरी है। इस सँकरी गली से वर ला रहे हैं।

रामू आवे ओ हेलमेल कोरतो
आयणी नू....., मारो रमकावे ओ।।

मेरा भाई ऐसी क्रियायें करता आ रहा है कि समधन से लगाव हो गया है।

आसी कसी तेज
बोताड़े ओ आयणी
काकेरो ने काकेरो
खवाड़्यो ओ आयणी।।

शब्दार्थ : आसी = ऐसी, **कसी** = कैसी, **बोताड़े** = बताना, **काकेरो** = कंकर।

इस प्रकार हमें नखरे क्यों बता रही हो। तुम लोगों ने कंकर ही खिलाये हैं।

काळी आम्बे ओ मोती झाझेड़ा
दुई–दुई हाथे ओ चुळे..... ।।

शब्दार्थ : झाझेडा = घने, **चुळे** = मसलना।

काले आम पर बहुत घने मोती लगे हैं। समधन दोनों हाथों से मसल रही है।

इने माण्डवे ते ढुलगी
टांगी रे भियान
पोली आयणी ते
काच काढ़ी रोही रे भियान।
पलो भायो ते
ओधो–पोछो होवे रे भियान
इने माण्डवे ते
गुल्ळु कोरे रे भियान।।

शब्दार्थ : **माण्डवे** = मंडप, **ढुलगी** = ढोलक, **पोली** = वो, **गुल्ळु** = चुम्बन।

इस मंडप में ढोलक टांग रखी है। समधन का जी ललचा रहा है। मेरा भाई आगे– पीछे हो रहा है। मण्डप में चुम्बन ले लिया ।

जो ते सोणे ने फैले
ओ झदर–वदर जाय
जो ते आयणी ने.....,
ओ झदर–वदर जाय।।

शब्दार्थ : सोणे = पटसन, **झदर–वदर** = छितराया।

पटसन की तरह समधन भी इधर–उधर छितरायी हो गयी है।

सोगाई मा सोगाई कोरी ओ
आयणी झोगड़ो मा कोरे ओ।।

शब्दार्थ : सोगाई = रिश्तेदारी, **झोगड़ो** = झगड़ा।

अरे ओ समधन! हम लोगों ने आपसे रिश्तेदारी स्थापित की है। आप लोग हमसे झगड़ा मत करो।

सूखली वाटकी लायो

घोटाळा पिर्‌या
तारी आसी न
सूखली मारों।।

शब्दार्थ : घोटाळा = गंजा, **पिर्‌या** = लड़का, **आसी** = माता।

ये गंजा लड़का सूखी वाटकी लाया, इसे लज्जा नहीं आयी क्या।

लाड़ो छिनाळे लायो ने
गली मोकळी रे लोल
लाड़ो छिनाळे लायो ने
गली मोकळी रे लोल।।

शब्दार्थ : छिनाळे = चरित्रहीन, **मोकळी** = फैली हुई।

वर को देखो, वह तो चरित्रहीन महिलाओं को ले आया है। इस कारण गलियाँ फैली हुई है।

लाड़ी नी बोइण छिनाळी
गली साकड़ी रे लोल
लाड़ी नी बोइण छिनाळी
गली साकड़ी रे लोल।।

शब्दार्थ : लाड़ी = वधू, **बोइण** = बहन, **साकड़ी** = सँकरी।

वधू की बहन चरित्रहीन है, इसलिए गली सँकरी है।

तेली ने रोही ने
तेल त लावी
तू घुणी चुपड़े ओ
नाहेली बेनी।

वाण्या घोर रोही ने
पुथल्या लावी
तू घुणी चुपड़े ओ
नाहेली बेनी।।

शब्दार्थ : रोही = रही, **लावी** = लायी, **घुणी** = मत, **चुपड़े** = मलना, **वाण्या** = बनिया, **पुथल्या** = कपड़े।

अरे ओ वधू! सुनो तो सही। तुम्हारे ससुराल पक्ष की महिलायें तेल लगाने के लिए लायी है। इनके द्वारा दिये कपड़े भी मत पहनाएँ, क्योंकि ये बनिये के घर रही और कपड़े लायी है।

इनी खोपड़ी मा
वारे लागे ओ,
डाहेली लाड़ी
बाहेर निकेळ।।

शब्दार्थ : खोपड़ी = झोपड़ी, **वारे** = देर, **डाहेली** = वृद्धा, **लाड़ी** = वधू, **बाहेर** = बाहर।

इस झोपड़ी के अन्दर बहुत देर लगा रही हो। वृद्धा वधू बाहर निकलो।

बेना लाड़ी ने
बुलावी ले चवरी मा
दिनेश आयणिंग
बुलाई ले घोरे मा।।

शब्दार्थ : बुलावी = बुलाना, **आयणिंग** = समधन, **घोरे** = घर, **चवरी** = मंडप।

अरे वर जी! तुम लाड़ी को चवरी में बुला लो। रही बात समधनों की तो उन्हें हमारा भाई घर में बुला लेगा।

हाथे चबद रे
बेना पाँये चबद
आपणी लाड़ी छे
बेना आपणी लाड़ी छे।।

शब्दार्थ : चबद = दबाना, **पाँये** = पैर, **आपणी** = अपनी।

वर जी, तुम हाथ–पैर को स्पर्श कर सकते हो, क्योंकि ये लाड़ी तुम्हारी ही है।

हाथे चबद ओ
बेनी पाँये चबद
आपणो लाडू ओ
बेनी आपनो लाडू छे।।

वधू, तुम हाथ–पैर को स्पर्श कर सकती हो, क्योंकि ये वर तुम्हारा ही है।

बेनी डेंगरा काटी आले ओ
बेनो टेके–टेके जाय।।

शब्दार्थ : **डेंगरा** = लकड़ी।

वधू लकड़ी काट लायी है। इस लकड़ी के सहारे वर चलता है।

चार फेरा फिरजे बेना
आपणी लाड़ी छे।।

हे वर! तुमने चार फेरे लेना, क्योंकि वधू तुम्हारी ही है।

सागे ने सुटो
अड़ी झड़ी खेले ओ

भाई ने सुरती
गबड़ गुटीया खेले ओ।।

शब्दार्थ : सागे = सागवान, **सुटो** = लकड़ी।

सागवान की लकड़ी है, जिससे खेल खेलना। भाई तो गबड़ गुटीया का खेल खेलते हैं।

घर मा भोराई डुकरी,
डुकरा टेवाड़े ओ
घर मा भोराई आयणी,
डुकरा टेवाड़े ओ।।

शब्दार्थ : डुकरी = वृद्धा, **डुकरा** = वृद्ध, **टेवाय** = आदत।

वृद्धा घर के अन्दर घुसी तो वृद्ध पुरुष उनसे छेड़छाड़ करेंगे।

चूलो भाळी जाजे ओ आयणी,
तारो चूलो ओ
हान्डी धुई जाजे ओ आयणी,
तारी हान्डी ओ।।

शब्दार्थ : चूलो = चूल्हा, **हान्ड़ी** = मटकी, **धुई** = धोना।

समधन हमारा चूल्हा देख जाओ। ये चूल्हा तुम्हारा ही है। मटकी धो जाओ, ये मटकी तुम्हारी ही है।

चूला पछळ कामटी,
चोट कोरे लोल,
आयणी ढुसी....
तोसी भोभड़े रे लोल।।

शब्दार्थ : पछळ = पीछे, **कामटी** = धनुष, **चोट** = लक्ष्य, **तोसी** = जैसी।

चूल्हे के पीछे धनुष रखा है। लक्ष्य वेध करता है। समधन तुम इस प्रकार इतराओ मत।

आयणी ने सोर्‌या न
सोर्‌या सेटा ओ
गूफण विणाओ
हुर्‌या टोळी ओ।।

शब्दार्थ : सेटा = बाल, **सोर्‌या** = लम्बे।

लीमड़ा नी भाजी रान्दो
कड़वी–कड़वी लागे ओ
आयणी तारे....., घालों
ओळी–ओळी कोहे ओ।।

नीम की भाजी कड़वी लगती है। समधन तो और –और कहती हैं ।

डाहेली लाड़ी ओ
लाड़ी गोधड़ी कूदे ओ
डाहेली लाड़ी ओ
लाड़ी गोधड़ी कूदे ओ।।

शब्दार्थ : गोधडी = गधी, **कूदे** = कूदना।

वधू वृद्धा हो चूकी है, इसलिए वह गधी के समान उछल कूद कर रही है।

डाहेलो लाड़ो ओ
लाड़ो गोधेड़ो कूदे ओ

डाहेलो लाड़ो ओ
लाड़ो गोधेड़ो कूदे ओ।।

वर वृद्ध हो चुका है, इसलिए गधे के समान नाच रहा है।

ओ बेनी धूळा ढिगळी मा रोमतेली,
पोड़ गुई जनम दुख मा।
ओ बेनी भाई भेळ मा रोमतेली,
पोड़ गुई जनम दुख मा।
ओ बेनी सइरी–सइरी रोमतेली,
पोड़ गुई जनम दुख मा।
ओ बेनी भेळी हाटे जातेली,
पोड़ गुई जनम दुख मा।।

शब्दार्थ : धूळा = धूल, **रोमतेली** = खेलना, **सइरी** = गाड़ीवाट, **हाटे** = हाट।

वधू तुम हमारे साथ धूल में खेलती थी, पर अब जनम भर के लिए दुख में पड़ गयी हो। तुम अपने भाईयों के साथ खुश होकर खेलती रहती थी, पर अब दुखों को झेलना पडेगा। गाड़ीवाट में खेला करते थे। साथ–साथ हाट भी जाते थे, पर अब दुखों को झेलना पड़ेगा।

बेनी रड़ो मती
बेनी कलपो मती
तोसी दुनिया गति,
तोसी आपणी गति।।

शब्दार्थ : रड़ो = रोना, **कलपो** = कुढ़ना।

हे वधू! तुम रोना छोड़ दो। जिस प्रकार दुनिया की गति होती है, अपनी दशा भी वैसी ही होगी।

पीपळियो पान जलक्यो
ओ नानी बेनेड़ी
भाई न साथ छुड़ दे
ओ नानी बेनेड़ी
सासू न भेळ कोर ले
ओ नानी बेनेड़ी।।

पीपल का पान चमकने लगा है। अब ऋतु बदल गयी है। तुम अपने भाईयों का साथ छोड़ दो और सास का साथ कर लो।

लाड़ी के घट्ठे बोसाणो
नी दळे ते ओरी लाते पोरी लाते
दी ने डंडान्डियो धोराड़सू ।।

शब्दार्थ : दळे = पिसना, **ओरी** = इधर, **पोरी** = उधर।

वधू को घट्टी में अनाज पीसने के लिए कहेंगे । यदि उसने ऐसा नहीं किया, तो लातें पड़ेंगी।

दाऊण दुइड़ा हेर रे राजू भाई
आयणिंग बाँधी लेसुन।।

शब्दार्थ : हेर = ढूँढना, **दुइड़ा** = रस्सी।

कहीं से रस्सी ढूँढकर लाओ। इस समधन को बाँध लेते हैं ।

एना खोपड़्या मा
काई वाता कोरे ओ
बुड़ेल लाड़ी,
चाल मारा देश।।

शब्दार्थ : खोपड़्या = झोपड़ी, **वाता** = बातें।

इस झोपड़ी में क्या बातें कर रही हो। हे वधू! अब हमारे देश चलो।

आजन रात रोही जा
ओ आयणी
बुकड़ान कुड़्या
मा सुवाड़सू।।

शब्दार्थ : बुकड़ान = बकरियों का, **कुड़्या** = बकरियों का निवास।

हे समधन! आज की रात्रि यहीं रह जाओ। यदि आज रात्रि यहीं रहती हो तो बकरियों के निवास में तुम्हें सुलाया जायेगा।

लाड़ी रोड़े,
लाड़ी नी बोणसी काह रोड़े
लाड़ी रोड़े,
लाड़ी नी सहेली काह रोड़े।।

वधू रो रही है, पर उसकी बहन क्यों रो रही है। देखो, उसकी सहेली भी रो रही है।

नीळी तुवेर पेळो फूल
ओ मारी नानी बेनी
तारो सासेरो लाम्बी दूरे
ओ मारी नानी बेनी
लाम्बी वाटे छोटी गाड़ी
ओ मारी नानी बेनी
आदी उजाड़ आदी माले
ओ मारी नानी बेनी ।।

शब्दार्थ : सासेरो = ससुराल, **लाम्बी** = लम्बी, **उजाड़** = सुनसान।

हरी तूवर में पीले फूल आ गये, मेरी प्यारी वधू। तुम्हारा ससुराल बहुत दूर है। रास्ता लम्बा है और गाड़ी छोटी है। आधी दूर सन्नाटा है और आधी दूर चढ़ाव है।

डोबो भोरीन गीत ओ,
मारा डोबाई मा डोबो ढुळी रहलो ओ
वाता कोरती जाजे गीत गाऊं,
आयणी ढसाड़ी ओ।।

शब्दार्थ : **डोबो = डब्बा, वाता = बात, ढसाड़ी = भगाना।**

मेरे पास डब्बा भरकर गीत है। मैं बात करती जाती हूँ और गीत गाती हूँ। मेरे गीत सुनकर समधन भाग जाती है।

डोबो भोरी गीत ओ,
मारा डोबाई मा डोबो ढुळी रहलो ओ
गायो गीत गवाड़ो,
नी गावे ते गाले थप्पड़ मारो ओ
हसली गीतारी काजे
उमेरी ने दुबले पाणी पाओ ओ।।

शब्दार्थ : **ढुळी** = ढुलना, **थप्पड़** = थप्पड़, **गीतारी** = गीत गाने वाली।

डब्बा भरकर गीत मेरे पास हैं। डब्बे से गीत गिरते हैं। मेरे गाये गीत गावोगे तो झापड़ पड़ेगी।

हामू नवली लाड़ी लाया रे,
भाळ रे बेना भाळ
हामू तातला रूटा खासू रे,

भाळ रे बेना भाळ।।

शब्दार्थ : **तातला** = गर्म, **रूटा** = रोटी, **खासू** = खायेंगे।

हम लोग नयी वधू लाये हैं। भाई देखो तो सही हम अब गर्म रोटियाँ खायेंगे।

लाड़ी पोछी फिरी–फिरी ने भाळ
तारो जुनलो संगात्यो बुलावे।।

शब्दार्थ : **पाछी** = पीछे, **फिरी** = मुड़कर, **जुनलो** = पुराना, **संगात्यो** = साथी।

वधू तुम पीछे मुड़कर क्या देख रही हो। क्या तुम्हारा पुराना साथी बुला रहा है।

तुखे कणेण परणायो रे
नवेला बेना
तुखे भाई ने परणायो रे
नवेला बेना
तुखे भोजाई ने परणायो रे
नवेला बेना।।

शब्दार्थ : **बइड्या** = पहाड़, **सासेरो** = ससुराल।

भूरे –भूरे पहाड़ दिख रहे हैं। हे वधू! देखो तुम्हारा ससुराल दिख रहा है।

कहावतें

आपणो अलग रांदणो।
शब्दार्थ : आपणो = अपना, **अलग** = भिन्न, **रांदणो** = बनाना।
अलग– अलग विचार।

आपणो करम आपणो करसू।
शब्दार्थ : करम = कर्म, **करसू** = करना।
अपना कार्य करना।

आपणा फलया या कुतरु बी न्हार बोण जाय।
शब्दार्थ : फळ्या = मोहल्ला, **कुतरु** = कुत्ता, **न्हार** = सिंह, **बोण जाय** = बन जाना।
अपने गाँव में ताकत दिखाना।

अगल जासु ते मांडा टुटसे,
पछल आक्सू ते डुळा फुटें।
शब्दार्थ : मांडा = घुटने, **डुळा** = आँखें।
दोनों तरफ समस्या।

आयी लोछमी पाछी नी आपजे।
शब्दार्थ : लोछमी = लक्ष्मी, **पाछी** = वापस।
समय का लाभ उठा लेना चाहिए।

इन्खेर ससरास नू खाटलू,
वथो उहडीस नू दळनो।
शब्दार्थ : इन्खेर = इधर, **सेसरास** = ससुर, **उहडीस** = बहू।
नियम का उल्लंघन करना

असलुत पाहणो ते उड़दी नू दाल।
शब्दार्थ : असलुत = व्यर्थ, **उड़दी** = उड़द, **पाहणो** = मेहमान।
बिन बुलाये मेहमान।

आपणा पोइशा रत ते दीसरा नू काई गोलती।
शब्दार्थ : पोइशा = पैसे, **रत** = खोटा, **दीसरा** = दूसरा।
खुद में खोट।

आपणी ओकल ने मातलू सबुन काजे वारु लागे।
शब्दार्थ : ओकल = बुद्धि, **मातलू** = धनवान, **सबून** = सब, **वारु** = अच्छा।
अपनी बुद्धि पर सबको भरोसा।

आपणो बेटूस ने थुड या की लुगाई वारु लागे।
शब्दार्थ : बेटूस = पुत्र, **थुड** = पड़ोस, **लुगाई** = पत्नी, **लागे** = लगना।
अपना पुत्र एवं दूसरे की पत्नी अच्छी लगती है।

आपणा मही काजे कुण खाटो कोहे।
शब्दार्थ : मही = छाछ, **खाटो** = खटाई, **कुण** = कौन, **काजे** = को।
अपनी चीज को सब अच्छा कहते हैं।

आपणी आईस काजे कुधू नी डाकणी कोहे।

शब्दार्थ : आईस = माँ, **कुधू** = कोई, **डाकणी** = डायन, **कोहे** = कहना।

अपनी माँ को कोई बुरा नहीं कहता।

हिमी ते बेटिस बास ना घर छे।

शब्दार्थ : हिमी = अभी, **बेटिस** = बेटी, **बास** = पिता, **छे** = है।

अभी भी सुधार का अवसर है।

अंडा सेवे दीसरु ने पिचा ली जाय तीसरु।

शब्दार्थ : दीसरा = दूसरा, **पिचा** = बच्चे, **तीसरु** = तीसरा।

अंडों की रक्षा करे दूसरा और उन्हें ले जाय तीसरा।

आपणी राफ डुचू आपणे चामडो कदू भराय।

शब्दार्थ : डुचू = घाव, **चामडो** = चमड़ी, **कदू** = से, **भराय** = भराना।

अपना घाव अपने मांस से ही भराता है।

आपणी राफ मा धोड़स्यु बी सुदुज भराय।

शब्दार्थ : राफ = बिल, **धोड़स्यु** = सर्प, **भराय** = भराना।

अपने बिल में सर्प भी सीधा जाता है।

साब ने ओगल ने गाोधड़ान पछळ नी रेहणो।

शब्दार्थ : साब = साहब, **ओगळ** = आगे, **पछळ** = पीछे, **रहणो** = रहना।

अधिकारी के आगे और गधे के पीछे नहीं रहना।

ऊंचू थुकसे ते आपणे मुंडका पोर आवसे।

शब्दार्थ : ऊंचू = ऊपर, **थुकसे** = थूँकना, **मुंडका** = सिर, **आवसे** = आना।

ऊपर थूकोगे तो खुद पर गिरेगा ।

आंधळु दळे ने कुतरा खाय।

शब्दार्थ : आंधळु = अंधा, **दळे** = पीसना, **कुतरा** = कुत्ता, **खाय** = खाना।

अंधा पीसे कुत्ते खायें।

आजुन पुरयो वाहणेन बास।

शब्दार्थ : आजुन = आज का, **पुरया** = लड़का, **वाहणेन** = कल, **बास** = पिता।

अंधा पीसे कुत्ते खायें।

उगतू दहाडान सब राम–राम कोरे।

शब्दार्थ : उगतू = उगते, **दहाडान** = सूरज।

उगते सूरज को सब प्रणाम करते हैं।

काका नू लेणो ने बाबा नू आपणो।

शब्दार्थ : काका = काकाजी, **बाबा** = ताऊजी।

काका का लेना और बाबा का देना।

आंगळी धोरिन खूबो धर सून।

शब्दार्थ : धोरिन = पकड़कर, **खूबो** = बाँह।

अंगुली पकड़कर बाँह पकड़ना।

उंधे बमड़े पाणी निहीं चोहड़े।

शब्दार्थ : उंधे = उल्टे, **बमड़े** = मंगरा, **चोहड़े** = चढ़ना।

उल्टे मंगरे पानी नहीं चढ़ता।

उटडान गोळू लांबू छे बाखून काटणेन नी छे।
शब्दार्थ : **गोळू** = गर्दन, **लांबू** = लम्बी।
ऊँट की गर्दन लम्बी होती है, पर काटने की नहीं है।

एक डुकळ्यू पूरा डाबरा काजे डोळचे।
शब्दार्थ : **डुकळ्यू** = मछली, **डाबरा** = पानी का गड्ढा, **डोळचे** = गंदा करना।
एक मछली पूरे पानी को गंदा कर देती है।

एक ते केरलो ने लिमडा पोर चढ्यू।
शब्दार्थ : **केरलो** = करेला, **लिमडा** = नीम, **चढ्यू** = चढ़ना।
एक तो करेला दूसरा नीम पर चढ़ा।

एक वेलान काचरा।
शब्दार्थ : **वेलान** = बेल, **काचरा** = काचरे।
एक बेल के काचरे।

एक की दस वात चढ़ावणो।
शब्दार्थ : **वाते** = बातें, **चढ़ावणो** = चढ़ाना।
एक की दस लगाना।

एक म्यान मा दुई तरवार नी रोहे।
शब्दार्थ : **तरवार** = तलवार, **दुई** = दो, **रोहे** = रहना।
एक म्यान में दो तलवार नहीं रह सकती।

बायरा रोडली रोहे ने पाहंत्या खाता रोहे।
शब्दार्थ : **बायरां** = महिलायें, **रोडती** = रोना, **पाहंत्या** = मेहमान।
महिलाएँ रोती रहती हैं और मेहमान खाते रहते हैं।

काळा वादळ्या बिहावे ने भूरला पाणी पाड़े।
शब्दार्थ : **वादळ्या** = बादल, **बिहावे** = डराना, **भूरला** = भूरे, **पाड़े** = गिरना।
काले बादल डराते हैं, पर भूरे पानी पटकते हैं।

चुपड़ी वाळो ने तरवार वाळू कदी नी भुखला मोरे।
शब्दार्थ : **चुपड़ी** = पुस्तक, **भूखला** = भूखे।
पुस्तक वाला और तलवार वाला भूखे नहीं रहते।

कोहणेन लाजणो नी ने साम्भळेन नाक नी।
शब्दार्थ : **कोहणेन** = कहने में, **लाजणो** = लज्जा।
कहने में शर्म नहीं, सुनने में नाक नहीं।

कदी डुंगो गाड़ी मा ने कदी गाड़ी डुंगा मा।
शब्दार्थ : **डुंगो** = नाव।
कभी नाव गाड़ी में तो कभी गाड़ी नाव में।

कसाईडान कहलो डगरी नी मरसे।
शब्दार्थ : **कहलो** = कहने से, **डगरी** = गाय।
कसाई के कहने से गाय नहीं मरती।

कागला काजे चुन्या मिलणो।
शब्दार्थ : **कागला** = कौआ, **मिलणो** = मिलना।
कौवे को श्रेष्ठ वस्तु मिलना।

लाकडान डुचर्‌यो पछन नी चाहड़े।
शब्दार्थ : **डुचर्‌यो** = मटकी, **पछन** = बाद में, **चाहड़े** = चढ़ना।
लकड़ी की हांडी फिर नहीं चढ़ती।

कागलान गला म चिट्टी।

शब्दार्थ : कागला = कौवे, **गळा** = गर्दन।

कौवे के गले में पत्र।

कुधुन चाले मुंडो ने कुधुन चाले हाथ।

शब्दार्थ : कुधुन = किसी का, **मुंडो** = मुँह, **चाले** = चलना।

किसी का मुँह और किसी के हाथ चलते हैं।

कोहे आंबो ने साम्भले आमली।

शब्दार्थ : आंबो = आम, **आमली** = इमली, **कोहे** = कहना, **साम्भले** = सुनना।

कहे आम और सुनना इमली।

कुड़्या मा गोळ फोड़नो।

शब्दार्थ : गोळ = गुड, **फोड़नो** = फोड़ना।

दीपक में गुड़ फोड़ना।

खातु जाय ने गुर्राय बी।

शब्दार्थ : खातु = खाना, **जाय** = जाना, **बी** = भी।

खाता भी जाता है और गुर्राता भी है।

खाय बोकड़ी तोसू ने सूके लाकड़ा तोसू।

शब्दार्थ : बोकड़ी = बकरी, **तोसू** = जैसा, **लाकड़ा** = लकड़ी।

खाता है बकरी जैसा और सुकता है लकड़ी जैसा।

खेत खाय गोधड़ा ने ठूकसून कुमार काजे।

शब्दार्थ : ठूकसून = मारना, **गधड़ो** = गधों।

फसल गधे खाते हैं और मार खाता है कुम्हार।

खरलीन कसुन ने वारुन रहसू।

शब्दार्थ : खरलीन = खरा, **कसुन** = कहना।

स्पष्ट कहना ठीक रहना।

खासे तेळी डाकणी ने नी खासे तेळी डाकणी।

शब्दार्थ : खासे = खाना, **डाकणी** = डायन।

खाय तो भी डायन नहीं खाय तो भी डायन।

गावेन पुरे दिसरे गावेन उहडिस।

शब्दार्थ : पुरे = लड़की, **उहडिस** = बहू।

गाँव की लड़की दूसरे गाँव की बहू।

घरेन कुकड़ो दाळ बोराबोर।

शब्दार्थ : कुकड़ो = मुर्गा।

घर की मुर्गी दाल बराबर।

मांडा आपणा पेट घेणी मूडे।

शब्दार्थ : मांडा = घुटने, **घेणी** = ओर।

अपने घुटने अपनी तरफ ही झुकते हैं।

घर आयु वेरी भी पान्थयो होवे।

शब्दार्थ : वेरी = शत्रु, **पान्थ्यो** = मेहमान।

घर आया शत्रु भी मेहमान होता है।

सत्रे जधान पाणी पिसू।

शब्दार्थ : सत्रे = सत्रह, **पिसू** = पीना।

सत्रह जगह का पानी पीना।

थूडिक वार नी बुराई ने जोनम भोर नू सुख।
शब्दार्थ : **थूडिक** = थोड़ा, **जेनम** = जनम।
थोड़ी देर की बुराई और जनम भर का सुख।

घर ना माडसे ते घोट्टी चाटे,
ने धुड़ मा पिठू आपे।
शब्दार्थ : **मांडसे** = मनुष्य, **घोट्टी** = घट्टी।
घर के लोग तो घट्टी चाट रहे हैं, और पड़ोसी को आटा दिया जा रहा है।

गधड़ो चारा ती दुस्ती
करसे ती खासे काई।
शब्दार्थ : **चारा** = घास, **करसे** = करना।
गधा घास से दोस्ती करे तो खायेगा क्या।

चार जणा नो मुडो कसो धरनू।
शब्दार्थ : **मुडो** = मुँह, **कसो** = कैसा।
चार व्यक्तियों का मुँह नहीं पकड़ सकते।

पच्चीस पोइशा नी डुचरी गुई,
बाखुन कुतरा नी जात ते भाळ ळी।
शब्दार्थ : **पोइशा** = पैसे, **डुचरी** = मटकी, **भाळ** = देखना।
पच्चीस पैसे की मटकी गयी, पर कुत्ते का व्यवहार तो जान लिया।

चित भी तारी ने पट भी तारी।
शब्दार्थ : **तारी** = तेरी।
चित भी तेरी और पट भी तेरी।

चुट्या ना घोर बैल बांधणो।
शब्दार्थ : **चुट्या** = चोर, **घोर** = घर, **बांधणो** = बांधना।
चोर के घर बैल बांधना।

चामड़ो जासे बाखुन दमड़ी नी जाय।
शब्दार्थ : **जासे** = जाना, **बाखुन** = पर, **दमड़ी** = पैसा।
चमड़ी जाय पर दमड़ी नहीं जाय।

जां पानी बताड़से वाँ कादेवड़ो भी नी जड़े।
शब्दार्थ : **जां** = जहाँ, **वताड़से** = बताना, **कादेवड़ो** = कीचड़, **जड़े** = मिलना।
जहाँ पानी बताया, वहाँ कीचड़ भी नहीं मिलता।

तेरा पेट मा दुखे ते जड़ी खाय।
शब्दार्थ : **जड़ी** = औषधि, **तेरा** = जिसके।
जिसके पेट में दुखे, वह औषधि खाय।

जां गुरू रोहे चां कीड़ा पोड़े।
शब्दार्थ : **गुळ** = मीठा, **चां** = वहाँ, **जां** = जहाँ।
जहाँ मिठास होती है, कीड़े हो जाते हैं।

जसो देस तसो भेस।
शब्दार्थ : **जसो** = जैसा, **तसो** = वैसा।
जैसा देस वैसा भेष।

जेको डवण्यो पलान डुबी।
शब्दार्थ : **जेको** = जिसकी, **डवण्यो** = लाठी, **डुबी** = भैंस।
जिसकी लाठी उसकी भैंस।

दहाड़े लावे ने दहाड़े खाय।

शब्दार्थ : दहाड़े = दिन, **लावे** = लाना।

हर दिन लाना, हर दिन खाना।

कुतरान छेमटो वाकलो रोहे।

शब्दार्थ : छेमटो = पूँछ, **वाकलो** = बाँकी, **रोहे** = रहना।

कुत्ते की पूँछ बाँकी ही रहती है।

कुतरु बसे ते झाड़ी ने बसे।

शब्दार्थ : कुतरु = कुत्ता, **बसे** = बैठना, **झाड़ी** = स्वच्छ।

कुत्ता भी स्वच्छ करके ही बैठता है।

डेडरा काजे तोलसू ने घोड़स्या काजे बाँधणो।

शब्दार्थ : डेडरा = मेंढक, **घोड़स्या** = सर्प, **तोलसू** = तोलना, **बाँधणो** = बाँधना।

मेंढक को तोलना और सर्प को बाँधना नहीं हो सकता।

बुटी नी दवड़ वड़ तोक।

शब्दार्थ : बुटी = गिलहरी, **दवड़** = दौड़, **वड़ =** वटवृक्ष।

गिलहरी की दौड़ वड़ तक।

धोंधली कदी बिलखी ने मुंडा ती,
वात विकळे ते पोछी नी आवसे।

शब्दार्थ : धोधली = धनुष, **बिलखी** = बाण, **मुंडा** = मुँह, **आवसे** = आना।

धनुष से बाण और मुँह से बात निकलने के बाद वापस नहीं आती।

रात –दहाड़े कमाणो ने,
जात काजे खवाड़णो।

शब्दार्थ : कमाणो = कमाना, **खवाड़णो** = खिलाना।

दिन–रात कमाना और जाति को भोजन करवाना।

दूरुन बयड़ो वारु लागे।

शब्दार्थ : दूरुन = दूर के, **बयड़ो** = पहाड़।

दूर के पहाड़ अच्छे लगते हैं।

दूध देणे वाळी डगरी,
सबुन वारु लागे।

शब्दार्थ : डगरी = गाय, **सबुन** = सबको।

दूध देने वाली गाय सबको अच्छी लगती है।

देखे भजल्या ने मांगे आलुबडू।

शब्दार्थ : भजल्या = भजिये, **आलुबडु** = आलु बड़ा।

देखे भजिये और माँगे आलु बड़ा।

वारु कोरिन विसरणो।

शब्दार्थ : विसरणो = भूलना।

अच्छा करके भूल जाना।

नानका पिर्‌यान दुस्ती ने जी को काळ।

शब्दार्थ : नानका = छोटे, **पिर्‌यान** = लड़के।

बच्चों की दोस्ती बहुत कठिन होती है।

नाचणे जाय ने घूंघटो कोरे।

शब्दार्थ : नाचणे = नाचना, **घूंघटो** = घूँघट।

नाचने जाना और घूँघट करना।

नवली लाड़ी नव दहाड़ान जूनली जलमरा तक।
शब्दार्थ : **नवली** = नयी, **जलमरा** = जनम तक।
नयी बहू नौ दिन तक पुरानी जनमों तक की।

पटल्यान गधड़ो सिंव तोक।
शब्दार्थ : **पटल्यान** = पटेल का, **सिंव** = सीमा।
पटेल का गधा सीमा तक।

पाणी मा पाँय न्हाखो नी ने डाबरा क देखिन बिहू नी।
शब्दार्थ : **डाबरा** = पानी का गड्ढा, **बिहू** = भय।
पानी में पैर नहीं रखता और कहता है कि डरुँ नहीं।

थुड मानलु बुराई करे पेट नी भरे।
शब्दार्थ : **थुड** = पड़ोसी।
पड़ोसी की बुराई से पेट नहीं भरता।

पुर्‌यान पाँय हिचका मा देखाय जाय।
शब्दार्थ : **पुर्‌यान** = पूत, **हिचका** = झूला।
पुत के पैर पालने में दिख जाते हैं।

बास काजे बा नी काहे ने,
धुडमा तिना काजे काको कोहे।
शब्दार्थ : **बास** = पिता।
पिता को पिता नहीं कहता और पड़ोसी को काका कहता है।

बुकड़ान आईस किही लुगुन राखे।
शब्दार्थ : **बुकड़ान** = बकरे की।
बकरे की माँ कब तक दिन पालेगी।

भूखलू न्हार डेडरा खाय।
शब्दार्थ : **भूखलू** = भूखा, **न्हार** = सिंह।
भूखा सिंह मेंढक खाता है।

अधू कुवू ने वथू झूलू।
शब्दार्थ : **अधू** = इधर, **वथू** = उधर।
इधर कुआँ उधर खाईं।

उजेगलु का आंगण मा गंगा,
बाखुन घोसेमळो रोहे।
शब्दार्थ : **आंगणा** = आँगन, **घोसेमळो** = गंदा।
आँगन में गंगा पर गंदा रहता है।

अगलोळी ने पछलोळी सब सार का।
शब्दार्थ : **अगलोळी** = आगे, **पछलोळी** = पीछे।
आगे के और पीछे के सब एक जैसे।

आदला रोटा पोर दाल नी झेलणो।
शब्दार्थ : **आदला** = आधी, **झेलणो** = लेना।
आधी रोटी पर दाल नहीं लेना।

इष्टाळो घर–घर भटके।
शब्दार्थ : **इष्टाळो** = जूठन खाने वाला।
जूठन खाने वाला घर–घर भटकता है।

दगडान सामने ईटड़ो नी टिके।
शब्दार्थ : **दगड़ान** = पत्थर के।
पत्थर के सामने ईंट नहीं टिकती।

जोन्या घर नी उजाळी वात।
शब्दार्थ : **उजाळी** = उज्ज्वल।
उजले घर की उजली बात।

उजाड़ी डगरीन खूँटो नी।
शब्दार्थ : **डगरी** = गाय, खूँटा = खूँटा।
स्वतन्त्र गाय का खूँठा नहीं होता।

उजाड़ी डगरीन गुवाळयो कुण।
शब्दार्थ : **गुवाळयो** = ग्वाला।
स्वतन्त्र गाय का ग्वाला कौन।

कुवाराली सौ सेली।
शब्दार्थ : **सेली** = सहेली।
कुँवारी लड़की की सौ सहेलियाँ।

कडवान वेलान कडवा फल।
कड़वी बेल के कड़वे फल।

काणी डगरी अणवाटे जाय।
शब्दार्थ : **अणवाटे** = रास्ता छोड़कर, **जाय** = जाना।
कानी गाय रास्ता छोड़कर चलती है।

कुतरा काजे ताव आवे असली वात कोरे।
शब्दार्थ : **ताव** = क्रोध, **कोरे** = करे।
कुत्ते को भी क्रोध आये, ऐसी बात करता है।

फून्द्याली ना चक्कर मा खाटली धर लेदी।
शब्दार्थ : **फून्द्याली** = लोमड़ी।
लोमड़ी के चक्कर में खटिया पकड़ ली।

कुड़कुड़ करने कुकड़ी नी जड़े।
शब्दार्थ : **कुकड़ी** = मुर्गी।
कुड़कुड़ करने को मुर्गी भी नहीं है।

सुकला खुदरा पुर आई ज्या।
शब्दार्थ : **खुदरा** = नाले, **आई ज्या** = आ गये।
सूखे नाले पुर आ गये।

खातु जाय खजाळतो जाय।
शब्दार्थ : **खातु** = खाता, **खजाळनो** = खुजली।
खाता जाय खुजली करता जाय।

घर वेचिन घर जमाई बणनो।
शब्दार्थ : **वेचिन** = बेचकर, **बणनो** = बनना।
घर बेचकर घर जमाई बनना।

घर–घर तळी वाजे।
शब्दार्थ : **तळी** = थाली।
घर–घर थाली बजना।

छिनाळी ना सौ चाळा।
शब्दार्थ : **छिनाळी** = चरित्रहीन, **चाळा** = ढोंग।
चरित्रहीन महिला के सौ ढोंग।

शिकार ना भोरसे डूचर्यू फूट्यू।
शब्दार्थ : **डुचर्यु** = मटकी।
शिकार के भरोसे मटकी फूट गयी।

सोला दायण जापो रत कोरे।
शब्दार्थ : **दायण** = दायीं, **रत** = बिगाड़।
सोलह दाई जापा बिगाड़ देती हैं।

समझे ते सोनू निहीं ते दगडू।
शब्दार्थ : **सोनू** = सोना, **दगडू** = पत्थर।
समझे तो सोना नहीं तो पत्थर।

कोल्या ना सत्रा सगा।
शब्दार्थ : **कोल्या** = सियार, **सगा** = सगे।
सियार के सत्रह सगे।

जीवाय होसे ते डाकणी भी नी खासे।
शब्दार्थ : **डाकणी** = डायन।
जीवन हो तो डायन भी नहीं खा सकती।

बुटी नो मुंडको घिसायो माकड्यान नाम हुयू।
शब्दार्थ : **बुटी** = गिलहरी, **मुंडको** = सिर, **माकड्यान** = बंदर, **हुयू** = हुआ।
गिलहरी का सिर घिस गया तो बंदर का नाम आ गया।

पटल्या नी पटलाई गुई पटलेन नी गुई लांडाई।
शब्दार्थ : **पटल्या** = पटेल, **पटलेन** = पटलन।
पटेल की पटलाई गयी, पटलन का गया इतराना।

संकाळ्या नी बुटी नी।
शब्दार्थ : **संकाळ्या** = संदेह करने वाले।
संदेह करने वालों की दवा नहीं होती।

नवलो वाण्यो कम तोले।
शब्दार्थ : **नवलो** = नया।
नया बनिया कम तौलता है।

ईहाव ते ईहाव होवे नातरा नू काई भरसो।
शब्दार्थ : **ईहाव** = विवाह।
विवाह तो विवाह होता है, नातरे का क्या भारोसा।

पोर वरसेन डुकरी दुखाई आबरेन रडनू आयू।
शब्दार्थ : **डुकरी** = वृद्धा, **दुखाई** = शान्त होना।
वृद्धा पिछले बरस शान्त हो गयी, पर रोना इस बरस आया।

पाँच बुलाया पोन्द्रा आया।
शब्दार्थ : **पोन्द्रा** = पन्द्रह।
पाँच बुलाये पन्द्रह आये।

वेहर्या ना सत्रा फंदा।
शब्दार्थ : **फंदा** = उटपटांग काम।
मूर्ख के सत्रह फंदे।

भण्यू पोर गुण्यो नी।
शब्दार्थ : **भण्यू** = पढ़ा–लिखा, **गुण्यो** = गुणवान।
लिखा पढा पर गुणवान नहीं बना।

बासेन खाणो जड्यू ते डूबी मर्यू।

शब्दार्थ : बासेन = पिताजी को, **जड्यू** = मिला।

पिताजी को भोजन मिला तो वे खाने में डूब मरे।

वारु–वारु ते रोई ग्या ने कुटवाळया कोहे,
आमू पार लाग जासून।

शब्दार्थ : कुटवाळ्या = ढोली।

अच्छे – अच्छे तो रह गये, पर ढोली कहे कि मैं पार निकल जाऊँगा।

मूस्ट्याळो चितू बिना मूछीवाळू मांजरु।

शब्दार्थ : मूस्टयाळो = मूँछ वाला, **चितू** = चीता।

मूँछ वाला चीता और बिना मूँछ का बिल्ला।

रात भर दळयो ने ढाकण्या मा निकाळ्यू।

शब्दार्थ : दळ्यो = पीसना, **ढाकण्या** = ढक्कन।

रात भर पीसा और ढक्कन भर निकाला।

लांडा ने वाहे कुण लागे।

शब्दार्थ : लांडा = बुरा व्यक्ति।

बुरे व्यक्ति के मुँह कौन लगे।

वाहळी आगठी जाणीन ओधी जाणो।

शब्दार्थ : वाहळी = वायु, **आगठी** = आग, **ओधी** = आग।

वायु और आग की जानकारी लेकर ही आगे बढ़ना।

नाबली जिबान वाली बायर मूंडे नी लागणो।

शब्दार्थ : नाबली = लम्बी, **बायर** = महिला।

लम्बी जुबान वाली महिला के मुँह नहीं लगना।

कुधो भी अमरत पीन नी आयु।

शब्दार्थ : कुधो = कोई, **अमरत** = अमृत।

कोई भी अमृत पीकर नहीं आया।

बायर ने आईस धोंधली अतरी रोहिस।

शब्दार्थ : बायर = स्त्री, **आईस** = माँ।

पत्नी और माता धनुष की तरह तेज रहती हैं।

आंधळा ना घर बाहरा नू फेरु।

शब्दार्थ : आंधळा = अंधा, **बाहरा** = बहरा।

अंधे के घर बहरे का पेहरा।

जू दहाडू डूब ज्यू हई थुडू उगसे।

शब्दार्थ : दहाडू = दिन, **डूब** = डूबना।

जो दिन चला गया वो कभी नहीं आता।

आगला ने पाछला सुब लांडा।

***शब्दार्थ* : आछला = पिछले।**

अगले–पिछले सब गड़बड़।

आवसे तिहीं पांथराई,
जासे तिहीं राम–रामी।

आओ तो सत्कार, जाओ तो राम–राम।

आंधळू दळे कुतरु खाय।
शब्दार्थ : आंधळू = अंधा।
अंधा पीसे कुत्ता खाय।

खवायगेलू ने वेरायगेलू निहीं जुड़े।
शब्दार्थ : खवायगेलू = गिरा देना।
खो गया और बो दिया जुड़ता नहीं।

वेळाई करन्यू अगळ रोहे।
शब्दार्थ : वेळाई = मस्ती, **अगळ** = आगे।
मस्ती करने वाला आगे रहता है।

मोटला मांडसेन मोटली बात।
शब्दार्थ : मोटला = बड़ा, **मांडसेन** = व्यक्ति।
बड़े व्यक्ति की बड़ी बात।

ऊँटड़ान मुंडको हालतो रोहे।
शब्दार्थ : ऊँटड़ान = ऊँट का, **रोहे** = रहना।
ऊँट का मुँह हिलता ही रहता है।

चुट्यू उल्टू घर धणी काजे लड़े।
शब्दार्थ : चुट्यू = चोर, **घरधणी** = मालिक।
चोर उल्टा मालिक को डांटे।

नांगळा ना घोर भोंगळा नू पेहरो।
शब्दार्थ : नागळा = नग्न।
नंगे के घर पुंगे का पहरा।

कांख मा पुर्‌यू ने गाँव मा डोंडी ठोके।
शब्दार्थ : कांख = बाँह, **डोंडी** = प्रचार।
बांह में लड़का और गाँव में ढूँढना।

कवड़ी नो काम नी,
इतरीक वार नी।
काम कुछ भी नहीं, पर अस्त व्यस्त रहना।

काटी आंगळी पोर नी मूते।
शब्दार्थ : आंगळी = अंगुली।
कटी अंगुली पर लघुशंका नहीं करना।

धवळा पोर काळो मेलणो।
शब्दार्थ : आंगळी = अंगुली।
सफेद पर काला रखना।

कुरकुर काकरो कोरणो।
शब्दार्थ : काकरो = कंकर।
कुरकुर काकरा करना।

खासे ते सेसरुस,
नी खासे ते घर वाळु।
शब्दार्थ : सेसरुस = ससुर, **घरवाळु** = घरवाला।
खाये तो ससुर, नहीं खाये तो घरवाला।

भालणी न तेसा हासे जे वारु नी।
शब्दार्थ : भालणी = लोमड़ी।
लोमड़ी की तरह हँसना ठीक नहीं।

भालणीन दुख इतरीक वार नो।
लोमड़ी का दुख थोड़ी देर का।

घर–घर मा हनुमान रोहे।
शब्दार्थ : रोहे = रहना।
घर– घर में हनुमान रहते हैं।

गधड़ा काजे वताड़ो ज्ञान गधडू हलावे कान।
शब्दार्थ : वताड़ो = बताना।
गधे को बताये ज्ञान गधा हिलाये कान।

गिला धुळे ती डोचर्यू बणे।
शब्दार्थ : डोचर्यू = मटकी।
गीली माटी से मटकी बनती है।

इडुग झाटको नम जाय,
मोटलू झाटको टूट जाय।
शब्दार्थ : इडुग = छोटा, **मोटलू** = बड़ा।
छोटा पौधा झुक जाता है, बड़ा पेड़ टूट जाता है।

आवड़े नी जावड़े मुन्ड़का मा खावड़े।
शब्दार्थ : आवड़े = आना, **मुन्डका** = सिर।
आता–जाता कुछ नहीं सिर खाता है।

वारलु कट्यू मारा जीव नो काळ,
निरमोळ हुई ने वजाड़ो कोरताळ।
अच्छा कटा मेरे जी काल, निरमल होकर बजाऊँ करताल।

गिली माटी ती डुचर्यो बोणे।
शब्दार्थ : डुचर्यो = मटकी।
गीली माटी से मटकी बनती है।

फाटली घाघरी वाळी घणी पादे।
शब्दार्थ : फाटली = फटी, **पांदे** = वायु विसर्जन।
फटी घाघरी वाली बहुत पादती है।

आवणो होय ते घर, जाणो होय ते वाट।
शब्दार्थ : आवणो = आना, **जाणो** = जाना।
आना हो तो घर, जाना हो तो मार्ग।

हमीं ते बेटी वासेन घर छे।
शब्दार्थ : हमी = अभी, **वासेन** = पिता।
अभी तो बेटी पिता के घर ही है।

ज्यु घोड़स्यु झूल दे तेरी पूँछ खिर जाय।
शब्दार्थ : घोड़स्यु = साँप, **खिर** = झड़ना।
जो साँप किसी को काट लेता है, उसकी पूँछ निश्चित ही टूट जाती है।

छटेन डुंगर वारू लागे।
शब्दार्थ : डुंगर = पहाड़, **वारु** = अच्छा, **लागे** = लगना।
दूर से पहाड़ अच्छा लगता है।

दहाड़े दाड़की ने मोहने मुहड़ो।
शब्दार्थ : दहाड़े = दिन, **दाड़की** = मजदूरी।
प्रतिदिन मजदूरी तथा प्रति मास महुआ।

टोक लावे ने टोक खाय।
शब्दार्थ : **लावे** = लाना, **खाय** = खाना।
नित्य कमाना और नित्य खाना।

हाय कोहोवले जीव निहीं निकळे,
हाथ चाटले पेट नी भोराय।
शब्दार्थ : **चाटले** = चाटना, **भोराय** = भरना।
हाय कहने से प्राण नहीं निकलते और हाथ चाटने से पेट नहीं भरता।

भाईन लाया ने माई मोरी।
शब्दार्थ : **लाया** = लाना, **माई** = माँ।
भाई की पत्नि लाये और माँ मरी।

खोड़नुन तेलु नाक काट लेदू,
दातुन कोरतेलु डुळा फुड़ लेदु।
शब्दार्थ : **कोरतेलु** = करना, **डुळा** = आँखें।
घास काटने में नाक काट लिया तथा दातुन करने में आँखें फोड़ ली।

मुन्ड़ी पोर नाड़ो ने नाड़ो हेरे।
शब्दार्थ : **मुन्डी** = सिर, **हेरे** = ढूँढना।
सिर पर रस्सी और ढूँढे कहीं और।

आखी रात दळ्यो ने कुड्या मा उसाड्यो।
शब्दार्थ : **दळ्यो** = पीसना, **उसाड्यो** = निकालना।
रातभर अन्न पीसा और दीपक में एकत्र किया।

इंखुर कुवो अथी खाई।
शब्दार्थ : **इंखूर** = इधर, **अथी** = इधर।
इधर कुआँ उधर खाई।

भूखला ते भूखला बाखुन सुखला खरी।
शब्दार्थ : **भूखला** = भूखे, **सुखला** = सुखी।
भूखे तो भूखे ही ठीक, पर सुखी तो हैं।

जे बैल वारूत चाले तिना काजे जूपे।
शब्दार्थ : **वारुत** = अच्छे, **काजे** = को।
जो बैल ठीक चलता है, उसी को जूपते हैं।

घर मा डुबी ने नाड़ा ने वेला निहीं कोरणों।
शब्दार्थ : **वेला** = कष्ट, **निहीं** = नहीं।
घर में भैंस तो रस्सी की चिंता क्यों करना।

हाथ मा ढुमणी ने बादशाही ठाट।
हाथ में कटोरा और राजा जैसा ठाट।

बखत पोड़े माकड्यो, भूई पोड़े फल खाय।
शब्दार्थ : **माकड्यो** = बंदर, **पोड़े** = गिरना।
खराब समय में बंदर को नीचे के फल खाने पड़ते हैं।

उश्याली मांजरी न मेंडा कान्टा।
शब्दार्थ : **माजरी** = बिल्ली, **कान्टा** = कान।
दोषी बिल्ली के कान नीचे रहते हैं।

आठखी खाय ने फुन्ज्यात निकाळे।
शब्दार्थ : **आठखी** = आग, **फुन्ज्यात** = चिंगारी।
आग खाना और चिंगारियाँ निकालना।

उठे अट्ठारे सुवे सतरे।
अट्ठारह व्यक्ति उठते हैं, सोते हैं सत्रह।

कागला ना गळा मा चुपड़ी।
शब्दार्थ : **कागला** = कौआ, **गळा** = गला।
कौवे के गले में पुस्तक।

पुथल्या माहेमा सुब नांगला।
शब्दार्थ : **पुथल्या** = कपड़ा, **माहेम** = अन्दर।
कपड़ों के अन्दर सब नग्न हैं।

आपणी माई काजे डाकणी कुण कोहे।
शब्दार्थ : **माई** = माँ, **डाकणी** = डायन।
अपनी माँ को डायन कोई नहीं कहता।

तिस लागे तत्यार कुवो खुदे।
शब्दार्थ : **तिस** = प्यास, **तत्यार** = तब।
जब प्यास लगे, तब कुआँ खोदते हैं।

एकले वाण्ये हाट नी भोराय।
शब्दार्थ : **एकले** = अकेले, **वाण्ये** = बनिया।
एक बनिये से हाट नहीं भराता।

आपणा दरे मा घोड़सु सुदुज जाय।
शब्दार्थ : **आपणा** = अपने, **सुदुज** = सीधा।
अपने बिल में साँप भी सीधा जाता है।

पटेल नी घुळी सींव तोक।
शब्दार्थ : **घुळी** = घोड़ी, **सीव** = सीमा।
पटेल की घोड़ी सीमा तक।

आवड़े निहीं ने पावड़ो घड़े।
शब्दार्थ : **आवड़े** = आना, **पावड़ो** = फावड़ा।
आता कुछ नहीं और फावड़ा बनाता है।

मांजरिन कोहले सिको नी टूटे।
शब्दार्थ : **मांजरिन** = बिल्ली, **कोहले** = कहने से।
बिल्ली के कहने से सींखा नहीं टूटता।

नांचणेन मोन निहीं ने आंगणान वाक दे।
शब्दार्थ : **नांचणेन** = नाचना, **आंगणान** = आँगन।
नाचने का मन नहीं और आँगन टेढ़ा बताना।

ठोकर खाय तिहीं ठाकुर बोणे।
शब्दार्थ : **तिहीं** = तब ही, **बोणे** = बनना।
जो ठोकर खाता है, वही ठाकुर बनता है।

सुवती कुतरी न घुदलावणों निहीं।
शब्दार्थ : **सुवती** = सोने वाली, **घुदलावणों** = घुदलाना।
सोती हुई कुतिया को छेड़ना नहीं।

घिसराक ठुकले काय हावे।
शब्दार्थ : घिसराक = निशान, **ठुकले** = ठोकना।
साँप के चिन्ह को मारने से कुछ नहीं होता।

तीन तिकड़ी वात बिगड़ी।
शब्दार्थ : वात = बात, **बिगड़ी** = बिगाड़ना।
तीन व्यक्तियों के कारण बात बिगड़ती है।

कळ ती काम लेणो, बल ती निहीं।
शब्दार्थ : कळ = धीरे से, **लेणो** = लेना।
धीरे से काम करना, बलपूर्वक नहीं।

कोदरे–कोदरे काम कोरणो।
शब्दार्थ : **कोदरे** = समझ, **कोरणो** = करना।
समझदारी से कार्य करना।

कदर कोरे तिहीं ओद्र चोहढ़े।
शब्दार्थ : कोरे = करना, **चोहढ़े** = चढ़ना।
दूसरे का सम्मान करोगे तो ऊपर चढ़ोगे।

बुले ते बुर बेचाय।
शब्दार्थ : बुले = बोलना, **बुर** = बेर।
जो बोलेगा उसी के बेर बिकेंगे।

देरी हाले तेरी चाले।
शब्दार्थ : तेरी = उसकी, **चाले** = चलना।
जिसका दरबार हो उसी की चलती है।

कुड़्या मा गुळ फोड़णो।
दीपक में गुड़ फोड़ना।

हिन्डे फिरे चों चर फिरे।
शब्दार्थ : हिन्डे = घूमना, **फिटे** = फिरना।
जो घूमता–फिरता है, उसी को मिलता है।

जाण्या न वाण्यो खाय, अंजायण्या न न्हार खाय।
शब्दार्थ : जाण्या = जानकार, **वाण्यो** = बनिया।
जानने वाले को बनिया और अंजान को सिंह खाता है।

वाण्यो धन जिरवे, वाण्या न डुबी चारो जिरवे।
शब्दार्थ : जिरवे = पचाना।
बनिया धन और उसकी भैंस चारा पचा जाती है।

बामण मर्‌यु ने गरे टळ्‌यु।
शब्दार्थ : बामण = ब्राम्हण, **टळ्‌यु** = टालना।
ब्राह्मण मरा और ग्रह टल गया।

वाण्यो लूटे बामन चाटे।
शब्दार्थ : लूटे = लूटना, **चाटे** = चाटना।
बनिया लूटता है, ब्राम्हण चाटता है।

अंबा लीम्बुड़ी ओळी वाण्या नु गळो दड़पणो चाह।
शब्दार्थ : **लीम्बुड़ी** = नींबू, **दड़पणो** = दबाना।
आम, नींबू और बनिये का गला दबाना चाहिये।

भूच्याक भगवान खाय।
शब्दार्थ : **भूच्याक** = भूखे को, **खाय** = खाना।
भूखे को भगवान भी खा जाते हैं।

मातलाक उंदरा खाय।
शब्दार्थ : **मातलाक** = धनवान, **उंदरा** = चूहा।
धनवान को चूहे खाते हैं।

गांडो गेहलू चूला घेणी पेहलू।
शब्दार्थ : **गांडो** = पगला, **घेणी** = तरफ।
चाटुकार चूल्हे की ओर पहले जायेगा।

मोकल्यु उंगेवणू गुयु बुड़ेवणू।
शब्दार्थ : **मोकल्यु** = भेजा, **उंगेवणू** = पूर्व, **बुड़ेवणू** = पश्चिम।
भेजा पूर्व गया पश्चिम।

डाबरा मा डुकळ्या मारे।
शब्दार्थ : **मा** = में, **मारे** = मारना।
थोड़े से पानी में मछलियाँ मारना।

डुंगर में डुकरी भली।
शब्दार्थ : **डुकरी** = वृद्धा, **डुंगर** = पहाड़।
पहाड़ में वृद्धा ही ठीक।

दहाड़ा पोड़्या वाका, बायर कोहे काका।
शब्दार्थ : **दहाड़ा** = दिन, **कोहे** = कहना।
अवस्था अधिक होने पर पत्नी भी काका कहती है।

मांडसा ना हाथे मा धोंधली,
बायरा ना हाथे मा फोंगली।
शब्दार्थ : **हाथे** = हाथ में, **फोंगली** = फुँकनी।
पुरूषों के हाथों में धनुष–बाण तथा महिलाओं के हाथों में फुँकनी अच्छी लगती है।

आवड़े न जावड़े घोटला घोड़ने जाय।
शब्दार्थ : **आवड़े** = आना, **घोड़ने** = बनाना।
आता–जाता कुछ नहीं, कुछ न कुछ बनाने जाते हैं।

घर धणी घर निहीं ने गोधड़ा धूम मचाये।
शब्दार्थ : **धणी** = पति, **गोधड़ा** = गधा।
गृहस्वामी घर नहीं तो गधे धूम मचाते हैं।

मातलु धनाक रोड़े न गरीब अभ्राक रोड़े।
शब्दार्थ : **मातलु** = धनवान, **रोड़े** = रोना।
धनवान धन के लिये तथा गरीब सम्मान के लिये रोता है।

लान्डान मुंडा मा धोन।
शब्दार्थ : **लान्डान** = दुर्जन, **धोन** = धन।
दुष्ट के मुँह में धन रहता है।

राजहठ ने बालहठ बोराबोर।
राजहठ और बालहठ बराबर है।

खाई मोरो काई जाय मोरो।
शब्दार्थ : **खाई** = खाना, **जाय** = जाना।
खा मरूं या जा मरूं।

देणेन मोन निहीं ने माय न वाठो ले।
शब्दार्थ : **देणेन** = देना, **वाठो** = भाग।
देने का मन नहीं और माँ का बहाना लेना।

खेड्या न दौड़ वाड़े तोक।
शब्दार्थ : खेड्या = गिरगिट, **वाड़े** = बागड़।
गिरगिट की दौड़ बागड़ तक।

हागणे जाय तत्यार दगड़ो हेरे।
शब्दार्थ : हागणे = शौच, **दगड़ो** = पत्थर, **हेरे** = ढूँढना।
जब शौच जाये, तब पत्थर खोजते हैं।

वाड़े वेलू चढ़ावणो।
शब्दार्थ : वाड़े = बागड, **चढ़ावणो** = चढ़ाना।
बागड़ पर बेल चढ़ाना चाहिए।

साहली फिरता वार निहीं लागे।
शब्दार्थ : साहली = छाया, **फिरता** = फिरते।
परछाई को स्थान बदलते देर नहीं लगती।

भूख मा ढुकला भला।
शब्दार्थ : ढुकला = महुआ का खाद्य पदार्थ।
भूख में साधारण भोज्य ही ठीक।

गाड़ी उथली जाय ने गणित सवारे ते काई काम दे।
शब्दार्थ : उथली = पलटना।
गाड़ी पलटने के बाद चिन्तन व्यर्थ है।

भात छुड़ देसुन बाखुन साथ निहीं।
शब्दार्थ : **भात** = थुली, **देसुन = देना।**
भात छोड़ देना, पर साथ नहीं।

पहेलिया

दुई भाईस एक चाँदे रोहे,
बाखुन एक–दूसरा घेणी भाळे निहीं।
शब्दार्थ : रोहे = रहना, **बाखुन** = पर।
दो भाई पास ही रहते हैं, पर एक दूसरे को नहीं देखते।
उत्तर – आँखें

आखा घरेन एक बोध।
शब्दार्थ : आखा = पूरा, **बोध** = बंध।
पूरे घर का एक बंधन।
उत्तर – नाभि

धवळ्या मोसे ओळी बेलबाई चालो दे।
शब्दार्थ : ओळी = ओर, **धवळ्या** = सफेद।
सफेद रस्सियों के अन्दर बेलवाई वस्तु पलटाती है।
उत्तर – दाँत और जीभ

मुठ भोरिन सिळया,
तुसे बी नी गिणाये, मेसे नी गिणाये।
शब्दार्थ : सिळ्या = तीलियाँ, **मेसे** = मुझे।

मुट्ठी भर तीलियों को न तुम गिन सकते न मैं।
उत्तर – बाल

पोयश्या दिने खवाड्यु, लोय–लोय थुके।
शब्दार्थ : पोय्श्या = पैसे, **खवाड्यु** = खिलाया।
पैसे देकर खिलाया, रक्त जैसा थूँके।
उत्तर – पान

पली फुटू–फुटू कोरे, पलो अघू–अघू हवे।
शब्दार्थ : पली = वो, **अघू** = आगे।
एक फटूं–फटूं करे, दूसरा आगे–आगे जाता है।
उत्तर – राबड़ी

खाल हेणिन कुआँ मा कुदो।
शब्दार्थ : खाल = त्वचा, **कुदो** = कूदना।
त्वचा निकालकर कुएँ में कूंदू।
उत्तर – कमीज

एक पगड़ी दुई भाई बांधे।
शब्दार्थ : पगड़ी = साफा, **बाँधे** = बांधना।
एक पगड़ी को दो भाई बाँधते हैं।
उत्तर – बैलों की रास

लाउर सुसेरती जाय,आंडा मेलती जाय।
शब्दार्थ : सुसेरती = तेज, **मेलती** = रखना।
पक्षी चलते जाता है, अंडे रखते जाता है।
उत्तर – सुई–धागा

चापरी पोर डाबरी,
डाबरी पोर वेलु, वेला पोर फूल।
शब्दार्थ : **चापरी** = समतल पत्थर, **वेलु** = बेल।
एक पत्थर, उस पर पानी, पानी पर बेल और बेल पर फूल।
उत्तर – चिमनी

आखु जोंगल खाई जाय ते भी भूखलुत।
शब्दार्थ : **जोंगल** = जंगल, **भूखलूत** = भूखा।
पूरा जंगल खा जाये फिर भी भूखा।
उत्तर – दरांता

पाँय काटिन झाड़के चोहड़ो।
शब्दार्थ : **पाँच** = पैर, **झाड़के** = पेड़।
पैर काटकर पेड़ पर चढ़ना।
उत्तर – जूते

भड़क बुकड़ी न एक सिंगड़ो।
शब्दार्थ : **बुकड़ी** = बकरी, **सिंगड़ो** = सींग।
एक बकरी का एक सींग।
उत्तर – घट्टी

तवला मा माछी नाचे।
शब्दार्थ : **तवला** = मिट्टी का पात्र, **माछी** = मछली।
तवे में मछली नाचे।
उत्तर – चम्मच

सूखले लकड़े हुली टचका फोड़े।
शब्दार्थ : **सूखले** = सूखा, **हुली** = पक्षी।

सूखी लकड़ी पर पक्षी चोंच मारे।
उत्तर – कुल्हाड़ी

चार खूँटी बावड़ी न नव सौ वेला।
शब्दार्थ : **वेला** = बेल, **चार खूँटी** = चार कोने वाली।
चार कोने वाली बावड़ी में नौ सौ बैल।
उत्तर – खटिया

नवली लाड़ी लायु,
हेरा पेट मा खाणो निहीं ते काय कोरणे लायु।
शब्दार्थ : **नवली** = नयी, **हेरा** = इसके।
नई पत्नी लाया, उसके पेट में भोजन नहीं तो क्यों लाया।
उत्तर – चक्की

ओर जाम पोर जाम, पाणी भाळिन मोर जाम।
शब्दार्थ : **जाम** = जाना, **मोर** = मरना।
इधर जाऊँ या उधर जाऊँ, पानी को देखकर मर जाऊँ।
उत्तर – कागज

मुंडको काटिन कुआँ मा कुदो।
शब्दार्थ : **मुंडको** = सिर, **काटिन** = काटकर।
सिर काट के कुएँ में कूदूँ।
उत्तर – साफा

राजा घर राणी नी जाय,
राणी घर राजा नी जाय।
शब्दार्थ : **नी** = नहीं, **जाय** = जाना।

राजा के घर रानी नहीं जाती, रानी के घर राजा नहीं जाता।
उत्तर – झाड़ू एवं बागरा

डाहली उठिस–उठिस ना दरेन मा हाथ घाले।
शब्दार्थ : डाहली = वृद्धा, **दरेन** = बिल।
वृद्धा उठ–उठ के बिलों में हाथ डालती है।
उत्तर – पोलका

दुई डुबी एक फाटू चावे।
शब्दार्थ : डूबी = भैंस, **फाटू** = घास।
दो भैंसे एक डन्ठल चबाती हैं।
उत्तर – बैलगाड़ी

जाम ते जाम बाखुन देतुत जाम।
शब्दार्थ : बाखुन = पर, **देतुत** = देता।
जाऊं तो जाऊं पर देता जाऊं।
उत्तर – द्वार

धन्यु धर्‌यो ने मन्यु पड़्युं।
शब्दार्थ : धर्‌यो = धरना, **पड़्यु** = पड़ना।
धन्यू धरा हुआ है, मन्यू पड़ा हुआ है।
उत्तर – केवलू

सूखला लाकड़ा पोर बुकड़ो बुबकारे।
शब्दार्थ : सूखला = सूखे, **बुबकारे** = बबकारी।
सूखी लकड़ी पर बकरा बबकारी मारता है।
उत्तर – ढोल

पूरी नहदी नो पाणी पी जाओ, पोर आपरो नहीं।
शब्दार्थ : नहदी = नदी, **जाओ** = जाना।
पूरी नदी का पानी पी जाऊँ, पर पेट नहीं भरता।
उत्तर – मछली पकड़ने की जाल

थुड़ मा चोहड़ों, छेन्डे उतरों।
शब्दार्थ : थुड़ = पड़ोस, **छेन्डे** = शीर्ष।
मूल से चढ़ना, ऊपर के अंतिम भाग से नीचे उतरना।
उत्तर – बालों पर कंघी

लाकड़ान डगरी, धूळान केवड़्या, धुण्यारीन पाँय मा बालु।
शब्दार्थ : डगरी = गाय, **केवड़्या** = बछड़े।
लकड़ी की गाय, धूल के बछड़े, दूध निकालने वाली के पैर में रस्सी।
उत्तर – दाऊन, वार्‌या

समटी भोरी न लाऊँ, पूरो घर लिपदम।
शब्दार्थ : समटी = चिउटी, **लिपदम** = लीपना।
अँगुलियों से पकड़कर लाऊँ, पूरा घर लीप दूँ।
उत्तर – चिमनी

चार भाई एकान मुंडा मा अंगुळ घाली ने पोड़–रोह।
शब्दार्थ : मुंडा = मुँह, **घाली** = भरना।
चार भाई एक दूसरे के मुँह में अंगुली डाल के सोये रहते हैं।
उत्तर – खटिया

डुबा न छेमटो धोरिन आवळी दोम ते उभे खुदरे भाखरे।

शब्दार्थ : छेमटो = पूँछ, **खुदरे** = नाला।

भैंसे की पूँछ मरोड़ दूं तो नाले में चिल्लाया करता है।

उत्तर – पानी का यंत्र

पच्चीस पुरह नी घाघरी एक बाखुन नाड़ी आंग–आंग।

शब्दार्थ : पुरह = लड़की, **आंग** = अलग।

पच्चीस लड़कियों की घाघरी एक, पर नाड़ियाँ सबकी अलग–अलग।

उत्तर – बीड़ी का बण्डल।

फुन्दाली हाट जाय, चोट्याली घोर रोहे।

शब्दार्थ : फुन्दाली = फून्देवाली, **चोट्याली** = चोटीवाली।

फून्देवाली हाट जाती है, चोटीवाली घर रहती है।

उत्तर – चोमल और झाड़ू

दिसु–दिसु सुवे ने राति–राति रोड़े।

शब्दार्थ : दिसू = दिन, **राति** = रात्रि।

दिन–दिन को सोती है, रात–रात को रोती है।

उत्तर – मोमबत्ती

मरलो बकरो पिठू खाय।

शब्दार्थ : मरलो = मरा हुआ, **पिठू** = आटा।

मृत बकरा आटा खाता है।

उत्तर – मांदल

काळी कुतरी पिण्डा मा गाभन।

शब्दार्थ : कुतरी = कुतिया, **गाभन** = गर्भवती।

काली कुतिया पिण्ड में गर्भवती।

उत्तर – बन्दूक (भुसुण्डी)

इच मा वेरे अड़े–धड़े उंगे।

शब्दार्थ : इच = बीच में, **धड़े** = पास में।

बीच में बोने पर आसपास उगता है।

उत्तर– घट्टी

भड़क बुकड़ी न तीन सिंगड़ा।

शब्दार्थ : सिंगड़ा = सींग।

एक बकरी के तीन सींग।

उत्तर – गोखरू

टिटेवड़ी काजे पानो उतर्‌यु ते ऊँटड़ो धावण दवड़्‌यु।

शब्दार्थ : उतर्‌यु = उतरना, **दवड़्‌यु** = दौड़ना।

टिटहरी को दूध उतरा, ऊँट पीने को दौड़ा।

उत्तर – चिलम

आखु बोयड़ा काजे खाई जाय ते डेढ़ पाला नी भूखलित।

शब्दार्थ : बोयड़ा = पहाड़, **पाला** = पत्तियाँ, **भूखलित** = भूखी।

पूरा पहाड़ खाने के बाद भी डेढ़ पत्ती की भूख रह ही जाती है।

उत्तर – बकरी

काळी चापरी हेटल चार डुकळया।

शब्दार्थ : डुकळ्या = नर मछली, **हेटल** = नीचे।

काले पत्थर के नीचे चार मछलियाँ।

उत्तर – भैंस के स्तन

खुदरिये–खुदरिये राजा नी बारात जाय।
शब्दार्थ : खुदरिये = नाला, **जाय** = जाना।
नाले–नाले राजा की बारात जाती है।
उत्तर – पक्षी (घुघाट)

ऊँचों थुड़ भूई मा डुडू।
शब्दार्थ : थुड़ = तना, **भूई** = भूमि।
ऊपर मूल नीचे भुट्टा।
उत्तर – बैल की पूँछ

काळी कुकड़ी न गुळ मास।
शब्दार्थ : कुकड़ी = मुर्गी, **गुळ** = गुड़, **मास** = मांस।
काली मुर्गी का मीठा माँस।
उत्तर – मधुमक्खी व मधुरस

काई रे मुन्डार्या तू ते पाहणी मा रोहे,
बाखुन अतरू काळु कसु।
शब्दार्थ : अतरु = इतना, **रोहे** = रहना।
तुम पानी में रहते हो, पर इतने काले कैसे।
उत्तर – काली मछली

धवळा गिलास मा दुई रंजो पाणी।
शब्दार्थ : रंजो = रंग, **पाणी** = पानी।
श्वेत गिलास में दो रंग का पानी।
उत्तर – मुर्गी का अण्डा।

घोसेमली बायरी झोपले उकेडू।
शब्दार्थ : घोसेमली = गंदी, **बायरी** = महिला, **झोपले** = द्वार।

गंदी महिला द्वार पर घूरा रखती है।
उत्तर – केकड़ा

ओरात्यां मुंडको बाखुन पाँय निहीं,
लाड़ान पाँय छे बाखुन मुन्डको निहीं।
शब्दार्थ : ओरात्यां = बारात, **बाखुन** = पर।
बारातियों के सिर हैं पर पैर नहीं। वर के पैर हैं पर सिर नहीं।
उत्तर– मछलियाँ एवं केकड़ा

झाझला बुर्या मा हिरबाई नाचे।
शब्दार्थ : झाझला = घना, **बुर्या** = बेर।
घने बेर के पेड़ों में हिरबाई नाचे।
उत्तर – जूँ

नौ सौ साड़ी, पाँय ती उगाड़ी।
शब्दार्थ : पाँय = पैर, **उगाड़ी** = वस्त्रविहीन।
नौ सौ साड़ियाँ पर पैर तो नग्न ही।
उत्तर – मुर्गी

काळो नाड़ो नडाय निहीं,
काबर्यु बैल जुपाय निहीं,
हिरेन जोत देवाय निहीं।
शब्दार्थ : नाड़ो = रस्सी, **देवाय** = देना।
काली रस्सी को बाँध नहीं सकते, चितकबरे बैल को जोत नहीं सकते, सुन्दर वस्तु को भी जोत नहीं सकते।
उत्तर – साँप, सिंह और बिच्छू

थम–थम रानी महल चोहड़े।

शब्दार्थ : चोहड़े = चढ़ना।

रूक–रूक के रानी महल चढ़ती है।

उत्तर – गिलहरी

सुधला काजे धोरे ते सुधलु मारे,
वाकड़्या काजे धोरे ते वाकड़्यु मारे।

शब्दार्थ : वाकड़्या = बाँका, **धोरे** = धरना।

सीधे को पकड़ो तो सीधा मारे, टेढ़े को पकड़ो तो टेढ़ा मारे।

उत्तर – बेर के काँटे

बास खुदरी मा पोड़ी रोहे ने बेटो पंचायत मा हिन्डे।

शब्दार्थ : बास = पिता, **खुदरी** = नाला।

पिता नाले में पड़ा रहता है और बेटा पंचायत में घूमता है।

उत्तर – महुआ और दारू।

हिरबाई ढुळी–ढुळिन जाय,
हिरेन फुन्दू टूटी–टूटी न जाय।

शब्दार्थ : हिरेन = हिरण, **टूटी** = टूटना।

हिरबाई लुढ़क–लुढ़क के जाती है, उसका फुन्दा टूट–टूट के जाता है

उत्तर – खजूर का पेड़

आईस सुधलिस, बेटिस वाकली।

शब्दार्थ : आईस = माता, **सुधलिस** = सीधा।

माँ सीधी और बेटी टेढ़ी–मेढ़ी।

उत्तर – इमली।

बावणीस बैल, खोळो भोरिन पोइटा पोटके।

शब्दार्थ : बावणीस = छोटा, **खोळो** = खलिहान।

एक बैल खलिहान भर के गोबर करता है।

उत्तर – महुआ

बास काळू, बेटूस धवळु।

शब्दार्थ : बास = पिता, **बेट्स** = बेटा।

पिता काला बेटा सफेद।

उत्तर – बबूल

ऊँचली बाईरीन रंगला दाँत।

शब्दार्थ : बाईरीन = महिला, **रंगला** = रंगीन।

ऊँची महिला के रंगीन दाँत।

उत्तर – खजूर

डाहलास डुकरा न चारिया भोरिन मुंडका।

शब्दार्थ : डाहलास = वृद्ध, **मुंडका** = सिर।

वृद्ध के बहुत सारे सिर।

उत्तर – ताड़ और गिलरे।

बासेन मुंडको काटे ते बेटुस बुपकारे।

शब्दार्थ : बेटूस = बेटा, **बुपकारे** = बबकारी।

पिता का सिर काटे तो बेटा बुबकारी देता है।

उत्तर – पटसन

सुब झाड़ने पाला रोहे, एक झाड़ेन निहीं रोहे।

शब्दार्थ : सुब = सब, **झाड़ेन** = पेड़।

सभी वृक्षों की पत्तियाँ रहती हैं पर एक वृक्ष की नहीं।
उत्तर – नागफनी

सेन्धरी घुड़ी ने नीळी पूँछ,
निहीं छुटे ते अटारी ती पूँछ।
शब्दार्थ : सेन्धरी = सिन्दूरी, **आटारी** = मंडप।
एक घोड़ी की नीली पूँछ, नहीं कह सको तो अन्य से पूछो।
उत्तर – प्याज

भूऱ्या हेलगान पेटे मा दाँत।
शब्दार्थ : हेलगान = पाड़ा, **पेटे** = पेट।
भूरे रंग के पाड़े के पेट में दाँत।
उत्तर – कद्दू

बैल बोठी रोहे ने रास चोरने जाय।
शब्दार्थ : बोठी = बैठना, **चोरने** = चरना।
बैल बैठा रहता है, रास चरने जाती है।
उत्तर – काचरा

भूऱ्या कुआँ मा फूलबाई नाचे।
शब्दार्थ : भूऱ्या = भूरा, **नाचे** = नाचना।
भूरे कुएँ में फूलबाई नाचती है।
उत्तर – राई

खारी कुकड़ी न पच्चीस आंडा।
शब्दार्थ : कुकड़ी = मुर्गी।
खारी मुर्गी के पच्चीस अंडे।
उत्तर – चने

अनपाणी घूघरी चुड़ाओ।
शब्दार्थ : अनपाणी = बिना पानी का, **चुड़ाओ** = बनाना।
बिना पानी से घूघरी बनाऊँ।
उत्तर – एरंड

बोयड़ा मा डुबी जणी, गाडे–गाडे चिकू ऊहो।
शब्दार्थ : जणी = प्रसव, **गाडे** = गाड़ी।
पहाड़ पर भैंस का प्रसव हुआ, गाड़ियाँ भर के दूध लाये।
उत्तर – कपास

धवळ्या बुकड़ा न बारे खाल।
शब्दार्थ : बारे = बारह, **खाल** = त्वचा।
सफेद बकरे की बारह खाल।
उत्तर – प्याज

भाचेम भिच कोकुआँ मा पाणी।
शब्दार्थ : भाचेम भिच = बीच में, **कोकुआँ** = हैन्डपम्प।
आसपास दीवार अन्दर पानी।
उत्तर – नारियल

काकड़ पोर बुकडू मार्‌यू, बारे वाटा पाड्‌या।
शब्दार्थ : काकड़ = सीमा, **वाटा** = भाग।
सीमा पर बकरा मारा, बारह भाग किये।
उत्तर – खोपरा

थाळी भरिन पोयशा, मेखे नी गिणाये, तुखे नी गिणाये।
शब्दार्थ : थाळी = थाली, **तुखे** = तुझे।

थाल भर कर पैसें, मुझसे भी नहीं गिनाते, तुमसे भी नहीं गिनाते।
उत्तर – तारें

धवळी कुकड़ी न काळो आंडो।

शब्दार्थ : धवळी = सफेद।
सफेद मुर्गी का काला अंडा।
उत्तर – दिन और रात

सरगे सुटू भूईमा गुटू।

शब्दार्थ : सरगे = स्वर्ग, **सुटू** = सोटा।
अम्बर में सोटा, पृथ्वी पर गोटा।
उत्तर – चक्रवाती हवायें

झक–झक वाटकी उरकेड़ा मा गड़ाये।

शब्दार्थ : वाटकी = कटोरी, **उरकेड़ा** = कूड़ा।
चमकती कटोरी, घूरे में धंसे।
उत्तर – चाँद

तावू इडुग, रूटू मोटलो।

शब्दार्थ : इडूग = छोटा, **मोटलो** = बड़ा।
तवा छोटा, रोटी बड़ी।
उत्तर – धरती और आकाश

एक धुड़ बारह डाले, सात पाले तेरे नाम काई छे।

शब्दार्थ : धुड़ = तना, **डाले** = डाली।
एक वृक्ष की बारह डालियाँ, सात पत्तियाँ उनके नाम क्या हैं।
उत्तर – एक वर्ष, बारह मास, एक सप्ताह

पाणी न मियळ कुण हेड़े।

शब्दार्थ : मियळ = मेल, **हेड़े** = निकालना।
पानी का मैल कौन निकालता है।
उत्तर – वायु।

झुपला मा थुड़, दुनिया मा वेलु।

शब्दार्थ : झुपला = कार, **वेलु** = बेल।
द्वार में मूल, दुनिया में बेल।
उत्तर – मार्ग

वाको तेको लाकड़ो, नी छुटे चों डाकणों।

शब्दार्थ : वाको = बाँका, **डाकणो** = डायन।
टेढ़ी–मेढ़ी लकड़ी, नहीं बता पाओ तो तुम डायन।
उत्तर – नदी

काकड़्यु कपास विचाये निही,
सरगे आठखी उल्हाय निहीं,
रातलो रूटू खवाय निहीं।

शब्दार्थ : आठकी = आग, **रातलो** = लाल।
काकड़े वाला कपास बिन नहीं सकते, अम्बर की आग बुझा नहीं सकते, लाल रोटी खा नहीं सकते।
उत्तर – तारे, बिजली, सूर्य

नव सौ ऊँटड़ी सव खूँटड़ी,
एक–एक खूँटे कतरी–कतरी ऊँटड़ी।

शब्दार्थ : ऊँटड़ी = ऊँटनी, **कतरी** = कितनी।
नव सौ ऊँटनी, सौ खूँटे, एक–एक खूँटे कितनी –कितनी ऊँटनी।
उत्तर – नौ–नौ

कोरह्यो ते कतरो हुयू।

शब्दार्थ : **कतरो** = कितना, **हुयू** = हुआ।

नौ चूहे उसमें से बिना पूँछ वाले चूहे का विवाह हुआ।

उत्तर – साढ़े चार किलो

आठा अठोला बारा बन्डोला, चार चोका दो बेलां।

आठ अठोले, बारह बन्डोले, चार चौके और दो बेले।

उत्तर – कुतिया, मादा सुअर, गाय और बकरी के स्तन

सोला रानी चार राजा,

गुया हाट रह्या रात सुया एक खाटली पोर।

शब्दार्थ : **हाट** = बाजार, **रह्या** = रहना।

सोला रानी, चार राजा, गये हाट रहे रात, सोये एक खटिया पर।

उत्तर – उंगलियाँ

वीस बुकड़ा न मुंडका काटो, पुण नुही निहीं निकळे।

शब्दार्थ : **बुकड़ा** = बकरा, **पुण** = पर।

बीस बकरों के सिर काटता हूँ, पर रूधिर नहीं निकलता।

उत्तर – नाखून

अकादमी द्वारा प्रकाशित अनुषंग पुस्तिकाएँ

बघेलखण्ड के लोकगीत
बघेलखण्ड में परम्परागत रूप से गाये जाने वाले गीत
संकलन-लखन प्रतापसिंह 'उरगेश' मूल्य-35/-

भरथरी
छत्तीसगढ़ी लोक गाथा भरथरी पर केन्द्रित
संकलन-नंद किशोर तिवारी, मूल्य-50/-

गणगौर
निमाड़ी आनुष्ठानिक पर्व गणगौर के परम्परागत गीत
संकलन-बसंत निरगुणे/रमेश चन्द्र तोमर, मूल्य-50/-

मालवा के लोकगीत
मालवा अंचल में विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले परम्परागत गीत
संकलन-चन्द्रशेखर दुबे, मूल्य-50/-

बुन्देलखण्ड के संस्कार गीत
बुन्देली संस्कार, विधि-विधान पर केन्द्रित गीत
संकलन-सुधीर तिवारी/माधव शुक्ल 'मनोज', मूल्य-50/-

कहे जन सिंगा
निमाड़ी संत सिंगाजी और उनके निर्गुण भजन
संकलन-डॉ. श्रीराम परिहार, मूल्य-50/-

बसन्त गीत
मौखिक साहित्य के भोजपुरी बसंत गीत
संकलन-कर्मेन्दु शिशिर, मूल्य-50/-

ईसुरी
बुन्देली के अद्वितीय कवि ईसुरी और उनकी फागें
संकलन-लोकेन्द्र सिंह नागर, मूल्य-50/-

कुमाऊँनी लोकगीत
कुमाऊँ की लोक परम्परा के गीत
संकलन-डॉ. देवसिंह पोखरिया, मूल्य-50/-

कहनात
बुन्देली लोकोत्तियाँ और कहावतें
संकलन-रमेश दत्त दुबे, मूल्य-50/-

कृष्ण लीला गीत
ब्रज की लोक परम्परा के श्रीकृष्ण भक्ति गीत
संकलन-रामनारायण अग्रवाल, मूल्य-50/-

आंचलिक प्रेमगीत
मध्यप्रदेश के जनपदीय प्रेमपरक गीत
सम्पादक-कपिल तिवारी, मूल्य-50/-

जनजातीय प्रेमगीत
मध्यप्रदेश जनजातीय प्रेमपरक गीत
सम्पादक-कपिल तिवारी, मूल्य-50/-

पूर्वांचल के लोकगीत
अवधी और भोजपुरी संस्कार गीत
संकलन-बी.एल. द्विवेदी, मूल्य-50/-

निमाड़ी लोक गीत
निमाड़ी लोक जीवन सम्बन्धी गीत
संकलन-रामनारायण उपाध्याय, मूल्य-50/-

मालवा की लोक कथाएँ
मालवा अंचल में परम्परागत रूप से प्रचलित लोककथाएँ
संकलन-प्रहलाद चंद्र जोशी, मूल्य-50/-

बुन्देली का फाग साहित्य
बुन्देली फागें तथा मूर्धन्य फागकार
संकलन-श्याम सुन्दर बादल, मूल्य-50/-

मध्यप्रदेश का लोकनाट्य माच
मध्यप्रदेश के मालवा अंचल की लोकनाट्य परम्परा
संकलन-डॉ. शिवकुमार मधुर, मूल्य-50/-

पाबूजी की पड़
राजस्थानी चरित नायक और लोक देवता पाबूजी की शौर्य गाथा
संकलन-डॉ. महेन्द्र भानावत, मूल्य-50/-

ख्याल अलीबख्श
प्रसिद्ध कवि, गायक तथा कृष्ण भक्त अलीबख्श और उनका ख्याल
संकलन-रेवती रमण शर्मा, मूल्य-50/-

बिहार के संस्कार गीत
जन्म से मृत्यु तक के अवसरों पर गाये जाने वाले गीत
संकलन-विन्ध्यवासिनी देवी, मूल्य-50/-

बसन्त के रंग
बुन्देली लोक कवि ईसुरी की फागों का चयन
संकलन-रमेश गुप्त, मूल्य-50/-

वृक्ष पुराण
लोक परम्परा में वृक्षों का महत्त्व
संकलन-महेश कुमार मिश्र 'मधुकर', मूल्य-50/-

तँवरधारी संस्कार गीत
चम्बल क्षेत्र के संस्कार गीतों पर केन्द्रित
संकलन-भगवान सहाय शर्मा, मूल्य-50/-

गोंड जनजातीय गीत
गोंड जनजातीय विविध अवसरों के गीतों पर केन्द्रित
संकलन-रूपसिंह कुशराम, मूल्य-50/-

मालवी कथाएँ
मालवा की प्रचलित लोक कथाएँ
संकलन-डॉ. एच.एस. गुगालिया, मूल्य-50/-

बुन्देली वैवाहिक गीत
बुन्देली वैवाहिक गीतों पर केन्द्रित
संकलन-डॉ. सुधा गुप्ता, मूल्य-50/-

कुमाऊँनी गाथा राजूला मालूशाही
कुमाउँनी गाथा पर केन्द्रित
संकलन- डॉ. देव सिंह पोखरिया, मूल्य-50/-

कोरकू संस्कार गीत
कोरकू जनजातीय संस्कार गीतों पर केन्द्रित
संकलन-डॉ. धर्मेन्द्र पारे, मूल्य-50/-

भीली लोक कथाएँ
भील समुदाय में प्रचलित कथाएँ
संकलन- गोविन्द गेहलोत, मूल्य-50/-

निमाड़ी गाथा रायसल
निमाड़ी गाथा पर केन्द्रित
संकलन-डॉ. धर्मेन्द्र पारे, मूल्य-50/-

ढोलाकुँवर
कोरकू जनजातीय गाथा
संकलन-डॉ. धर्मेन्द्र पारे, मूल्य-50/-

काल दर्शन
भारतीय काल परम्परा पर केन्द्रित
संकलन-महेश कुमार मिश्र 'मधुकर', मूल्य-50/-

भील जनजातीय गीत
भील जनजाति के संस्कार गीतों पर केन्द्रित
संकलन-गोविन्द गेहलोत/महेश चन्द्र शांडिल्य, मूल्य-50/-

बुन्देली गीत
बुन्देलखण्ड अंचल में प्रचलित संस्कार गीत
संकलन-पुष्पा खरे, प्रवीण खरे, मूल्य-50/-

भीली कथाएँ
भील जनजाति का कथा साहित्य
संकलन-डॉ. एच.एस. गुगालिया, मूल्य-50/-

संस्कृति सलिला नर्मदा
नर्मदा के तटों पर केन्द्रित निबन्ध
संकलन-डॉ. श्रीराम परिहार, मूल्य-50/-

बारेला
जनजातीय जीवन और साहित्य पर केन्द्रित
संकलन-डॉ. गुलनाज़ तँवर, मूल्य-50/-

सौंर
बुन्देलखण्ड में निवासरत जनजाति का सांस्कृतिक अध्ययन
संकलन-डॉ. ओमप्रकाश चौबे, मूल्य-50/-

कहावत कथांजलि
बुन्देली कहावतों पर आधारित कथाएँ
संकलन-रमेश गुप्त, मूल्य-50/-

भीली गीत एवं कहावतें
भील जनजातीय की वाचिकता
संकलन-डॉ. बद्री मालवीय, मूल्य-50/-

पाण्डवों की भारत गाथा
राजस्थानी आख्यान पण्डुन के कड़े
संकलन-डॉ. महेन्द्र भानावत, मूल्य-50/-

कोरकू गीत
कोरकू जनजाति के गीत
संकलन-स्व. श्री राधेश्याम शांडिल्य, मूल्य-50/-

भीली लोक माताएँ
भील जनजाति की मातृकाएँ की वाचिकता
संकलन-डॉ. पूरन सहगल, मूल्य-50/-

भीली गीत एवं लोकोक्तियाँ
भील जनजाति की वाचिकता
संकलन-मंगला गरवाल, मूल्य-50/-

काया गीत
मध्यप्रदेश के निमाड़ के मृत्यु गीत
संकलन-रमेशचन्द्र तोमर 'निमाड़ी', मूल्य-50/-

कोरकू जीवन राग
पर्व-उत्सव और त्योहार के गीत
संकलन-डॉ. धर्मेन्द्र पारे, मूल्य-50/-

भारतीय जल विज्ञान
पुरातल जल विज्ञान पर भारतीय लोक चिन्तकों के विचार
संकलन-महेश कुमार मिश्र 'मधुकर', मूल्य-50/-

बैगा गीत
बैगा जनजाति के प्रचलित पारम्परिक गीत
संकलन-अर्जुनसिंह धुर्वे, मूल्य-50/-

बारेली गीत
बारेला जनजाति के विविध अवसरों के गीत
संकलन-लक्ष्मीनारायण तिवारी/ सदाशिव कौतुक, मूल्य-50/-

भिलाली कथाएँ
भिलाला जनजाति का वाचिक साहित्य
संकलन-गजेन्द्र आर्य, मूल्य-50/-

गणगौर गीत
भील जनजाति के उत्सव सम्बन्धी गीत
संकलन-भानुशंकर गेहलोत, मूल्य-50/-

भोजपुरी-उड़िया लोकोक्तियाँ
संकलन-प्रो. हरिश्चन्द्र मिश्र, मूल्य-50/-

पँवारी गीत
पवारी का वाचिक साहित्य
संकलन-गोपीनाथ कालभोर, मूल्य-50/-

कोरो आना
कोरकू जनजाति की कथाएँ
संकलन-डॉ. धर्मेन्द्र पारे, मूल्य-50/-

बैगा गीत
अवसरानुकूल पारम्परिक गीत
संकलन-भागवती रठुरिया, वसंत निरगुणे, मूल्य-50/-

गोपी शतक
संकलन-डॉ. लोकेन्द्र सिंह गुर्जर 'नागर', मूल्य-50/-

जनजातीय प्रकाशन

सम्पदा
मध्यप्रदेश की सात प्रमुख जनजातियों
की सांस्कृतिक परम्परा का साक्ष्य
संकलन-सम्पादित, मूल्य-300/-

आख्यान
गोण्ड जनजातीय कथा इतिहास का साक्ष्य
संकलन-डॉ. विजय चौरसिया, मूल्य-200/-

कोरकू देवलोक
कोरकू जनजाति के देवलोक पर केन्द्रित
संकलन-डॉ. धर्मेन्द्र पारे, मूल्य-300/-

गोण्ड देवलोक
गोण्ड देवलोक परम्परा पर केन्द्रित
संकलन-डॉ. धर्मेन्द्र पारे, मूल्य-300/-

प्रतिरूप
मध्यप्रदेश के जनजातीय मुखौटे
सम्पादक-कपिल तिवारी, मूल्य-20/-

मिट्टी शिल्प
मध्यप्रदेश की मिट्टी शिल्प निर्माण
परम्परा पर केन्द्रित
संकलन-वसंत निरगुणे, मूल्य-20/-

सहरिया
आदिम जनजाति के साहित्य,
संस्कृति और कला पर केन्द्रित
संकलन-वसंत निरगुणे, मूल्य-20/-

भिम्मा
भिम्मा जनजाति के साहित्य
संस्कृति और कला पर केन्द्रित
संकलन-शेख गुलाब, मूल्य-20/-

समष्टि
मध्यप्रदेश की मिट्टी शिल्प निर्माण पर केन्द्रित
सम्पादक-कपिल तिवारी, मूल्य-20/-

काष्ठ शिल्प
मध्यप्रदेश की काष्ठ शिल्प परम्परा पर केन्द्रित
सम्पादक-कपिल तिवारी, मूल्य-50/-

प्रत्यय (अंग्रेजी)
जनजातीय और संस्कृति पर सम्वाद
सम्पादक-कपिल तिवारी, मूल्य-40/-

कथावार्ता
मध्यप्रदेश की जनजातीय लोक मिथकथाएँ
सम्पादक-कपिल तिवारी, मूल्य-50/-

शब्दकोश

बघेली-हिन्दी शब्दकोश
संकलन-श्रीनिवास शुक्ल 'सरस', मूल्य-200/-

निमाड़ी-हिन्दी शब्दकोश
संकलन-महादेव प्रसाद चतुर्वेदी, दिनकरराव दुबे, मूल्य-350/-

मालवी-हिन्दी शब्दकोश
संकलन-भगवतीलाल राजपुरोहित, मूल्य-350/-

बुन्देली-हिन्दी शब्दकोश
संकलन-रमेश गुप्त, मूल्य-300/-

जनपदीय वाचिक साहित्य पर केन्द्रित पुस्तकें

मध्यप्रदेश के जनपदीय ऋतुगीत
सम्पादक-कपिल तिवारी, मूल्य-300/-

मध्यप्रदेश के जनपदीय खेलगीत
सम्पादक-कपिल तिवारी, मूल्य-300/-

मध्यप्रदेश की जनपदीय कथाएँ
सम्पादक-कपिल तिवारी, मूल्य-300/-

मध्यप्रदेश की जनपदीय पहेलियाँ
सम्पादक-कपिल तिवारी, मूल्य-300/-

श्रीरामचरितमानस भीली भावार्थ
संकलन-भानुशंकर गेहलोत, मूल्य-300/-

निमाड़ी मुहावरें
संकलन-वसंत निरगुणे, मूल्य-300/-

मालवी संस्कार गीत
संकलन-निर्मला राजपुरोहित, मूल्य-300/-

चम्बल की वाक्पद्धति
संकलन-डॉ. भगवान सहाय शर्मा,
सुधीर आचार्य, मूल्य-300/-